



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (I)  
PART II—Section 3—Sub-section (i)  
प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 161]

नई दिल्ली, शुक्रवार, अप्रैल 24, 1981/वैशाख 4, 1903

No. 161]

NEW DELHI, FRIDAY, APRIL 24, 1981/VAISAKHA 4, 1903

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के

रूप में रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

वित्त मंत्रालय

वित्तिक कार्य विभाग

अधिसूचनाएं

नई दिल्ली, 24 अप्रैल, 1981

सं० का० भि० 309 (घ):- केन्द्रीय सरकार, सरकारी बचत-पत्र अधिनियम, 1959 (1959 का 46) की धारा 12 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात्:-

1. संक्षिप्त नाम, प्रारम्भ और लागू होना:- (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम राष्ट्रीय बचत-पत्र (छठा निर्गम) नियम, 1981 है।

(2) ये 1 मई, 1981 को प्रवृत्त होंगे।

(3) ये राष्ट्रीय बचत-पत्र (छठा निर्गम) को लागू होंगे।

2. परिभाषाएं:- इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ में अन्यथा प्रयोजित न हो:-

(1) "अधिनियम" से सरकारी बचत-पत्र अधिनियम, 1959 (1959 का 46) अभिप्रेत है;

(2) "पत्र" से राष्ट्रीय बचत-पत्र (छठा निर्गम) अभिप्रेत है;

(3) "सहकारी सोसाइटी" से, सहकारी सोसाइटी अधिनियम, 1912 (1912 का 2) के अधीन या उस समय प्रवृत्त किसी अन्य

विधि के अधीन रजिस्ट्रीकृत या रजिस्ट्रीकृत समझी गई सोसाइटी अभिप्रेत है;

(4) "नियम" से, उस समय प्रवृत्त किसी विधि द्वारा या उसके अधीन स्थापित नियम अभिप्रेत है।

(5) "प्रकल्प" से इन नियमों से संलग्न प्रकल्प अभिप्रेत है;

(6) "सरकारी कंपनी" से कम्पनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 617 में यथापरिभाषित कंपनी अभिप्रेत है;

(7) "पहचान पत्र" से ऐसी पहचान पत्र अभिप्रेत है जो नियम 12 के अधीन किसी पत्र के धारक को दी गई है;

(8) "स्थानीय प्राधिकरण" से, ऐसा नगर नियम, नगरपालिका समिति, जिला बोर्ड, परतन प्रायुक्त, निकाय या अन्य प्राधिकरण अभिप्रेत है, जो नगरपालिका या स्थानीय विधि के नियंत्रण या प्रबंध के लिए विधिक रूप से हकदार है या जिसे ऐसा नियंत्रण या प्रबंध सरकार द्वारा व्यस्त किया गया है;

(9) "पुराना पत्र" से ऐसा पत्र अभिप्रेत है जो डाकघर बचत-पत्र, नियम, 1960 या राष्ट्रीय बचत-पत्र (प्रथम निर्गम) नियम, 1965 या राष्ट्रीय बचत-पत्र (चतुर्थ निर्गम) नियम, 1970 या राष्ट्रीय बचत-पत्र (पंचम निर्गम) नियम, 1972 या राष्ट्रीय विकास बंधपत्र नियम, 1977 के अधीन दिया गया है,

(10) "डाकघर" से भारत में ऐसा डाकघर अभिप्रेत है जो बचत बैंक का कार्य कर रहा है।

3 बें अधिधान जिनमें ये पत्र दिए जाएंगे—राष्ट्रीय बचत-पत्र (छठा निर्गम) 10 रु० 50 रु०, 100 रु० 500 रु० 1000 रु० और 5000 रु० के अधिधानों में जारी किए जाएंगे।

4. पत्रों के प्रकार और उनका जारी किया जाना :—(1) पत्र निम्न-लिखित प्रकार के होंगे, अर्थात्:—

(क) एकल धारक प्रकार के पत्र ;

(ख) संयुक्त "क" प्रकार के पत्र ; और

(ग) संयुक्त "ख" प्रकार के पत्र।

(2) (क) एकल धारक प्रकार के पत्रों को किसी व्यक्ति को स्वयं उसकी ओर से या किसी अवयस्क की ओर से या किसी अवयस्क को जारी किया जाएगा,

(ख) संयुक्त "क" प्रकार के पत्रों को दो ऐसे व्यक्तियों को जारी किया जा सकेगा जो दोनों धारकों को संयुक्त रूप से या उत्तरजीवी को देय हों,

(ग) संयुक्त "ख" प्रकार के पत्रों को दो ऐसे व्यक्तियों को संयुक्त रूप से जारी किया जा सकेगा जो धारकों में से किसी को या उत्तरजीवी को देय हों।

5. पत्रों का क्रय:—किसी भी रकम के पत्रों का क्रय किया जा सकेगा।

6. पत्रों के क्रय के लिए प्रक्रिया:—पत्र का क्रय करने का हक्क कोई व्यक्ति या तो स्वयं या अपने सदेशवाहक या लघु बचत-योजना के किसी प्राधिकृत अधिकर्ता के माध्यम से प्ररूप 1 में (जो सभी डाकघरों में मुफ्त मिलता है) आवेदन 1 मई, 1981 को या उसके पश्चात् किसी डाकघर में प्रस्तुत करेगा।

7. पत्रों का अन्य व्यक्तियों के निमित्त क्रय—नीचे की सारणी के स्तम्भ 1 में विनिर्दिष्ट कोई व्यक्ति या निकाय उक्त सारणी के स्तम्भ 2 की तत्स्थानी प्रविष्टि में उसके नाम के सामने विनिर्दिष्ट व्यक्तियों के निमित्त पत्र क्रय कर सकेगा:

परन्तु ऐसा तभी होगा, जब उक्त स्तम्भ 2 में विनिर्दिष्ट व्यक्ति इन नियमों के अधीन पत्र क्रय करने के पात्र हैं।

सारणी

व्यक्ति या निकाय जो क्रय कर सकता है के निमित्त

1	2
(1) कोई व्यक्ति	किसी अवयस्क के निमित्त
(2) कोई सहाकारी सोसाइटी, जिसके अन्तर्गत सहाकारी बैंक या अनु-सूचित बैंक भी है।	हमके ऐसे सदस्यों, ग्राहकों, कर्मचारियों या ठेकेदारों के निमित्त जिनका धन ऐसी सोसाइटी या बैंक में निक्षेप के रूप में या अन्यथा है।
(3) कोई राजपत्रित सरकारी अधिकारी, किसी सरकारी कंपनी का या किसी निगम का या किसी स्थानीय प्राधिकरण का कोई अधिकारी, या किसी निगमित निकाय जैसे किसी राज्य अधिनियम के अधीन स्थापित और राज्य सरकार द्वारा उसकी शासकीय हैसियत में इस निमित्त प्राधिकृत किसी विपणन समिति या भारतीय रिजर्व बैंक का कोई अधिकारी	ऐसे व्यक्तियों के निमित्त, जिनका धन ऐसे अधिकारी या रिजर्व बैंक में निक्षेप के रूप में या अन्यथा है।

8 विधिक निविदान:—पत्र के क्रय के लिए संशय निम्नलिखित रीतियों में से किसी में किसी डाकघर में किया जा सकेगा, अर्थात्:—

(1) नकद ;

(2) बैंक, अदायगी आदेश या मांग देय ड्राफ्ट ;

(3) डाकघर बचत बैंक खाते से प्रत्याहरण के लिए पासबुक सहित प्रत्याहरण प्ररूप ओ सम्यक् रूप से हस्ताक्षरित है।

(4) उस पुराने परिपक्व पत्र का अभ्यर्पण जो निम्नलिखित रूप में सम्यक् रूप से उन्मोचन किया गया है, "नो पत्र के जारी करने से संशय प्राप्त हुआ—संलग्न आवेदन देखिए।"

9. पत्रों का जारी किया जाना:—(1) नियम 8 के अधीन संशय करने पर उनके सिवाए, जहां संशय बैंक, अदायगी आदेश या मांग देय ड्राफ्ट द्वारा किया जाता है, प्रमामात्यतः पत्र तत्काल जारी किया जाएगा और ऐसे पत्र की तारीख उसके जारी करने की तारीख होगी।

(2) जहां पत्र क्रय करने के लिए संशय किसी बैंक, अदायगी आदेश या मांग देय ड्राफ्ट के द्वारा किया जाता है वहां यथास्थिति, बैंक, अदायगी आदेश या मांग देय ड्राफ्ट के भागमें के वसूल होने से पूर्व ऐसा पत्र जारी नहीं किया जाएगा और ऐसे पत्र की तारीख, यथास्थिति, बैंक, अदायगी आदेश या मांग देय ड्राफ्ट के भुनाने की तारीख होगी।

(3) यदि किसी कारण से पत्र तत्काल जारी नहीं किया जा सकता है तो क्रेता को ऐसी अनंतिम रसीद दी जाएगी जो बाद में पत्र में बदली जा सकेगी और ऐसे पत्र की तारीख वह होगी जो, यथास्थिति, उपनियम (1) या उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट है।

10. पुराने पत्र के भागमें के बदले में पत्र:—पुराने पत्र का ऐसा धारक जो उस पत्र के भुनाने का हकदार है, प्ररूप 1 में इन नियमों के अधीन पत्र के अनुदान के लिए आवेदन कर सकेगा ; ऐसे आवेदन की प्राप्ति पर आवेदक को इन नियमों के अधीन पत्र जारी किया जाएगा और जारी करने की तारीख वह होगी, जिसको सम्यक्: उन्मोचन पुराना पत्र प्रस्तुत किया जाता है।

11. धनियमित धृतियां:—(1) इन नियमों के उल्लंघन में क्रय या अर्जित किए गए किसी पत्र को धारक द्वारा यथाशीघ्र भुनाया जाएगा जैसे ही इन नियमों के उल्लंघन से धृति के तथ्य के बारे में पता चलता है और इन नियमों के उल्लंघन में किसी धृति पर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा।

(2) यदि किसी धृति पर जो इन नियमों के उल्लंघन में है, कोई ध्यान दिया गया है तो उसे तुरन्त सरकार को बापस कर दिया जाएगा। ऐसा न करने पर सरकार अन्तर्निहित रकम को उस धन से धू-राजस्व की बकाया के रूप में वसूल करने की हकदार होगी जो सरकार द्वारा विनिधानकर्ता को देय है।

12. पहचान पर्ची:—(1) यदि किसी पत्र के एकल अवयस्क धारक द्वारा जिसके अन्तर्गत अवयस्क की ओर से धारक भी है या संयुक्त धारकों द्वारा उस डाकघर में जहां पत्र को रजिस्ट्रो का: गई है, किसी भी समय पहचान पर्ची जारी करने के लिए निवेदन किया जाता है, तो ऐसे धारक या धारकों को पहचान पर्ची, उसके या उनके द्वारा उस पर हस्ताक्षर करने के पश्चात् जारी की जाएगी।

(2) पत्र के अंतिम उन्मोचन के समय पहचान पर्ची अभ्यर्पित की जाएगी या उसके खो जाने पर ऐसे खो जाने के बारे में डाकतार-महानिदेशक द्वारा अधिकथित प्ररूप में डाक घर को सूचना दी जाएगी।

13. एक डाक घर से दूसरे डाक घर को अन्तरण:—(1) कोई पत्र, किसी, ऐसे डाक घर से, जहां वह रजिस्ट्रीकृत है, किसी अन्य डाकघर को डाक-तार महानिदेशक द्वारा अधिकथित प्ररूप में धारक या धारकों

द्वारा दोनों डाकघरों में से किसी डाकघर में आवेदन करने पर अन्तरित किया जा सकेगा।

(2) प्रत्येक ऐसे आवेदन पर पत्र के धारक या धारकों द्वारा हस्ताक्षर किए जाएंगे। परन्तु संयुक्त 'क' प्रकार के पत्र या संयुक्त 'ख' प्रकार के पत्र की दशा में आवेदन पर संयुक्त धारकों में से किसी एक के द्वारा हस्ताक्षर किए जा सकेंगे, यदि दूसरा मर गया है।

14. पत्र का एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को अन्तरण.—(1) कोई पत्र डाकघर के किसी अधिकारी की लिखित पूर्वे सहमति से अन्तरित किया जा सकेगा जैसे कि नीचे विनिर्दिष्ट है। (जिसे इसमें इसके पश्चात् इन नियमों में प्राधिकृत डाकपाल कहा गया है)।

वे मामले जिनमें अन्तरण की मंजूरी दी जा सकती है उस अधिकारी का पक्षमात्र जो अन्तरण की अनुज्ञा देने के लिए सक्षम है।

- |  |   |   |
|--|---|---|
| <p>(क) (1) मूलक धारक के नाम से उसके वारिस को ;</p> <p>(2) किसी धारक से न्यायालय को या न्यायालय के आदेश के अधीन किसी व्यक्ति को,</p> <p>(3) एकल धारक से दो संयुक्त धारकों के नाम जिनमें अन्तरक एक व्यक्ति होगा.</p> <p>(4) संयुक्त धारकों में से किसी एक के नाम</p> | } | <p>प्रधान डाकपाल या उस डाकघर का उपडाकपाल जहाँ पत्र रजिस्ट्रीकृत है।</p> |
|--|---|---|

(ख) अन्य मामलों में प्रधान डाकपाल

(2) कोई प्राधिकृत डाकपाल पत्र के अन्तरण के बारे में अपनी सहमति तभी देगा जबकि निम्नलिखित शर्तों की पूर्ति हो जाती है, अर्थात् :—

- (क) अन्तरिती इन नियमों के अधीन पत्रों का प्रयत्न करने का पात्र है ;
- (ख) अन्तरण, पत्र की तारीख से कम से कम एक वर्ष की समाप्ति के पश्चात् किया जाना है या जहाँ अन्तरण की ऐसी अवधि की समाप्ति के पूर्व बांटा की जाती है वहाँ अन्तरण निम्नलिखित प्रवर्गों में से किसी में आता है, अर्थात् :—
- (1) नैमिक प्रेम और स्नेह के कारण किसी निकट संबंधी को अन्तरण ;

स्पष्टीकरण :—इस नियम के प्रयोजन के लिए "निकट संबंधी" से पति-पत्नी, पारम्परिक पूर्व-पुरुष या पारम्परिक वंशज, भाई या बहिन अभिप्रेत है।

- (2) मूलक धारक के वारिस के नाम अन्तरण ;
- (3) किसी धारक से न्यायालय या न्यायालय के आदेशों के अधीन किसी अन्य व्यक्ति को अन्तरण ;
- (4) नियम 16 के अनुसार अन्तरण, और
- (5) संयुक्त धारकों में से किसी एक की मृत्यु हो जाने की दशा में उसके उत्तरजीवी के नाम अन्तरण।

(ग) अन्तरण के लिए आवेदन, डाक तार महानिदेशक द्वारा अधिकृत प्ररूप से किया जाता है और उस पर पत्र के धारक या धारकों द्वारा हस्ताक्षर किए जाते हैं ;

परन्तु संयुक्त 'क' प्रकार के पत्र या संयुक्त 'ख' प्रकार के पत्र की दशा में आवेदन पर धारकों में से किसी एक द्वारा हस्ताक्षर किया जा सकेगा यदि दूसरा मर गया है।

(3) नियम (2) के उपबन्धों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना कोई प्राधिकृत डाकपाल केवल किसी अवयस्क की ओर से धारण किए गए पत्र के अन्तरण के बारे में अपनी सहमति देगा, यदि प्रस्थापित अन्तरण के समय, यथास्थिति, अधिनियम की धारा 5 के खण्ड (ख) के उप खण्ड (1) या उपखण्ड (2) में निविष्ट माना या पिता या संरक्षक लिखित रूप में यह प्रमाणित करता है कि अवयस्क जीवित है और ऐसा अन्तरण उसके हित में है।

(4) अन्तरण की प्रत्येक दशा में जो कि नियम 16 के अधीन अन्तरण से भिन्न है मूल पत्र को सम्यक् रूप से उन्मोचन किया जाएगा और नए पत्र को जिस पर वही तारीख है जो अध्यापित मूल पत्र की है, अन्तरिती के नाम जारी किया जाएगा।

15. एकल धारक से संयुक्त धारक को अन्तरण और विपर्ययः—नियम 14 के उप-नियम (1) के उपबन्धों के अधीन रहते हुए इस प्रभाव का आवेदन करने पर :—

- (क) एकल धारक के नाम के पत्र को धारक और किसी अन्य व्यक्ति के नाम में संयुक्त रूप से अन्तरित किया जा सकेगा,
- (ख) संयुक्त धारकों के नामों के पत्र को संयुक्त धारकों में से किसी के नाम में अन्तरित किया जा सकेगा।

16 पत्र का गिरावो रखा जाता :—(1) डाक तार महानिदेशक द्वारा अधिकृत प्ररूप में अन्तरक और अन्तरिती द्वारा आवेदन करने पर रजिस्ट्रीकरण के कार्यालय का डाकपाल किसी भी समय प्रतिभूति के रूप में ऐसे पत्र के अन्तरण की अनुज्ञा :—

- (क) भारत के राष्ट्रपति या राज्य के राज्यपाल को उतरी शासकीय हैमियत में देगा ;
- (ख) भारतीय रिजर्व बैंक या किसी अनुसूचित बैंक या सहकारी सोसाइटी को जिसके अंतर्गत सहकारी बैंक भी है, देगा ;
- (ग) किसी निगम या सरकारी कम्पनी को देगा ; और
- (घ) किसी स्थानीय प्राधिकरण को देगा ;

परन्तु किसी अवयस्क को ओर से प्रयत्न किए गए पत्र का अन्तरण इस उपनियम के अधीन तब तक नहीं होने दिया जाएगा जब तक कि अधिनियम की धारा 5 के यथास्थिति खण्ड (ख) के उपखण्ड (1) या उपखण्ड (2) में निविष्ट अवयस्क की माना या पिता या संरक्षक यह प्रमाणित नहीं करता है कि अवयस्क जीवित है और अन्तरण अवयस्क के फायदे के लिए है।

(2) जब उपनियम (1) के अधीन प्रतिभूति के रूप में किसी पत्र का अन्तरण किया जाता है तो रजिस्ट्रीकरण के कार्यालय का डाकपाल पत्र पर निम्नलिखित पुष्टीकरण करेगा, अर्थात् :—

"प्रतिभूति के रूप में . . . . . को अन्तरित।"

(3) इन नियमों में प्रामाण्य उपबन्धित है उन के सिवाय, इस नियम के अधीन किसी पत्र के अन्तरिती के बारे में तब तक यह समझा जाएगा कि वह पत्र का धारक है जब तक कि उसका पुनः अन्तरण उपनियम (4) के अधीन नहीं हो जाता है।

(4) उपनियम (2) के अधीन अंतरिती पत्र को गिरबीवार के लिखित प्राधिकार पर प्राधिकृत डाकपाल की लिखित रूप में पूर्व मंजूरी से पुनः अन्तरित किया जा सकेगा और जब ऐसा पुनः अन्तरण किया जाता है तब रजिस्ट्रीकरण के कार्यालय का डाकपाल पत्र पर निम्नलिखित पृष्ठांकन करेगा; अर्थात् :—

“.....को पुनः अन्तरित”।

**टिप्पण 1 :** भारत सरकार का ऐसा राजपत्रित प्राधिकारी जो राष्ट्रपति या राज्य के राज्यपाल की ओर से उपनियम (1) के अधीन प्रतिभूति के रूप में पत्र स्वीकार करता है या उपनियम (4) के अधीन गिरबी का विमोचन करता है, यह प्रमाणित करेगा कि वह भारत के राष्ट्रपति । .....राज्य के राज्यपाल की ओर से लिखित या विलेख निष्पादित करने के लिए सविधान के अनुच्छेद 299 के अधीन सम्यक् रूप से प्राधिकृत है।

**टिप्पण 2 :—**यथास्थिति, भारतीय रिजर्व बैंक या किसी अनुमोचित बैंक या किसी सहकारी सोसाइटी का, जिसमें कोई स्थानीय प्राधिकरण सम्मिलित है, ऐसा प्राधिकारी जो तत्संबंधी संस्थाओं की ओर से उपनियम (1) के अधीन प्रतिभूति के रूप में पत्र स्वीकार करता है या उपनियम (4) के अधीन गिरबी का विमोचन करता है तारीख सहित अपने हस्ताक्षर और कार्यालय की मुद्रा के अधीन यह प्रमाणित करेगा कि वह उक्त संस्था के अनुच्छेदों के अधीन उसकी ओर से ऐसी लिखत या विलेख निष्पादित करने के लिए सम्यक् रूप से प्राधिकृत है।

(5) जहां किसी पत्र पर उपनियम (2) और (4) के अधीन किए गए अनेक पृष्ठांकनों के परिणामस्वरूप उस पत्र पर उसी प्रकार का अतिरिक्त पृष्ठांकन करने के लिए कोई स्थान शेष नहीं रहता है, वहां ऐसे पत्र के बचले में रजिस्ट्रीकरण के कार्यालय के डाकपाल द्वारा एक नया पत्र जारी किया जा सकेगा।

(6) उपनियम (5) के अर्थात् जारी किए गए किसी नए पत्र को इन नियमों के सभी प्रयोजनों के लिए उस पत्र के समतुल्य समझा जाएगा जिसके बचले में वह जारी किया गया है।

**17. खो गए या नष्ट हो गए पत्र का प्रतिस्थापन :—**(1) यदि कोई पत्र खो जाता है, चोरी हो जाता है, नष्ट हो जाता है, विकृत हो जाता है या विरूपित हो जाता है तो उसका हकदार व्यक्ति उस डाकघर को जिसमें पत्र का रजिस्ट्रीकरण हुआ है या किसी अन्य डाकघर को, जिस दशा में आवेदन रजिस्ट्रीकरण के डाकघर को भेज दिया जाएगा, पत्र की दूसरी प्रति दिए जाने के लिए आवेदन कर सकेगा।

(2) ऐसे प्रत्येक आवेदन के साथ निम्नलिखित होंगे, अर्थात् :—

(क) विनिर्दिष्टां वर्णित करने वाला विवरण, जैसे कि पत्र का संख्यांक, रकम और तारीख तथा वे परिस्थितियां जिसमें ऐसी हानि, चोरी, विनाश, विकृति या विरूपण हुआ है;

(ख) एक पहचान पर्ची, यदि कोई हो।

(3) यदि रजिस्ट्रीकरण के डाकघर के भार-साधक अधिकारी का पत्र खो जाने, चोरी, विनाश, विकृति या विरूपण के बारे में समाधान हो जाता है, तो वह पत्र की दूसरी प्रति डाक-तार महानिदेशक द्वारा अधिकथित प्ररूप में तब जारी करेगा जब आवेदक एक या अधिक अनुमोदित प्रतिभूतियों या बैंक की गारण्टी सहित डाक-तार महानिदेशक द्वारा अधिकथित प्ररूप में एक अतिपूति बन्धपत्र दे देता है:

परन्तु यह कि जहां खो गए, चोरी हुए, नष्ट हुए, विकृत हुए या विरूपित हुए पत्र या पत्रों का अंकित या कुल अंकित मूल्य 500

रु० या उससे कम है, वहां पत्र या पत्रों की दूसरी प्रति ऐसी प्रति भूति या गारण्टी के बिना भी एक अतिपूति बन्धपत्र देने पर आवेदक को जारी की जा सकेगी:

परन्तु यह और कि जब ऐसा आवेदन ऐसे पत्र के बारे में किया जाता है जो विकृत या विरूपित है, तो चाहे वह कितने ही अंकित मूल्य का है, पत्र की दूसरी प्रति ऐसे अतिपूति बन्धपत्र, प्रतिभूति या गारण्टी के बिना तब जारी की जा सकेगी, यदि विकृत या विरूपित पत्र और पहचान-पर्ची, यदि कोई हो, का अध्ययन किया जाता है और पत्र की पहचान मूल रूप से जारी किए गए पत्र के रूप में की जा सकती है।

(4) उपनियम (3) के अधीन जारी की गई पत्र की दूसरी प्रति को इन नियमों के सभी प्रयोजनों के लिए मूल पत्र के समतुल्य माना जाएगा मित्राय इसके कि इसे उस डाकघर में, जिसमें ऐसे पत्र का रजिस्ट्रीकरण हुआ है, अन्य किसी डाकघर में पूर्व मत्यापन के बिना भुनाया नहीं जा सकेगा।

**18. नामनिर्देशन :—**(1) उपनियम (2) से (6) के उपबन्धों के अधीन रहते हुए, पत्र के एकल धारक, या संयुक्त धारक पत्र का क्रय करने समय प्ररूप 1 में आवश्यक विनिर्दिष्टां भर कर ऐसे किसी व्यक्ति को नामनिर्दिष्ट कर सकेगा जो यथास्थिति, एकल धारक या दोनों संयुक्त धारकों की मृत्यु की दशा में पत्र और उस पर शोध्य रकम के संवाय का हकदार होगा। यदि पत्र का क्रय करने समय ऐसा कोई नामनिर्देशन नहीं किया जाता है तो यथास्थिति एकल धारक, संयुक्त धारक या उत्तरजीवी संयुक्त धारक पत्र क्रय करने के पश्चात्, किसी भी समय, किन्तु उसके परिपक्व होने के पूर्व, उस डाकघर में, जिसमें पत्र का रजिस्ट्रीकरण किया गया है, डाकपाल को प्ररूप 2 में एक आवेदन करके नामनिर्देशन कर सकेगा।

(2) एक से अधिक व्यक्तियों का नामनिर्देशन ऐसे मामलों में ही किया जाएगा जहां पत्र 500 रु० या अधिक अभिधान का है अन्यथा नहीं।

(3) ऐसे किसी पत्र के बारे में कोई नामनिर्देशन नहीं होगा जिसके बारे में किसी अवयस्क द्वारा या उसकी ओर से आवेदन किया गया है और जो उसके द्वारा या उसकी ओर से धारित है।

(4) इस नियम के अधीन पत्र के धारक या धारकों द्वारा किए गए नामनिर्देशन को उस डाकघर के जिसमें वह रजिस्ट्रीकृत है डाकपाल को पत्र सहित नियम 29 के उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट मूल्य के डाक टिकट लगाकर प्ररूप 3 में आवेदन करके रद्द या परिवर्तित किया जा सकेगा।

(5) विभिन्न तारीखों पर रजिस्ट्रीकृत पत्रों की बाबत नामनिर्देशन के लिए या किसी नामनिर्देशन के रद्दकरण या किसी नामनिर्देशन में परिवर्तन करने के लिए पृथक् आवेदन किए जाएंगे।

(6) नाम निर्देशन या किसी नाम निर्देशन का रद्दकरण या किसी नामनिर्देशन का परिवर्तन उस तारीख से प्रभावी होगा जिसको वह डाकघर में रजिस्ट्रीकृत होता है और वही तारीख पत्र पर लिखी जाएगी।

**19. परिपक्व होने पर भुनाया जाना :—**किसी भी अभिधान के पत्र की परिपक्वता जबकि पत्र की तारीख से प्रारंभ होने वाली छह वर्ष की अवधि होगी। इसकी परिपक्वता अवधि की समाप्ति के पश्चात् किसी भी समय पत्र के भुनाए जाने पर संश्लेष रकम जिसमें ब्याज भी सम्मिलित है, 910 रु० के अभिधान वाले पत्रों के लिए 20.15 रु० [होगी और किसी अन्य अभिधान के लिए समानुपातिक दर पर होगी। नीचे सारणी में यथा विनिर्दिष्ट ब्याज पत्र के धारक या धारकों को प्रत्येक वर्ष के अंत में प्रोद्भूत होगा और प्रत्येक वर्ष के अंत में पांचवें वर्ष के अंत तक

इस प्रकार प्रोद्भूत होने वाला ब्याज धारक की ओर से पुनर्वितरित किया गया माना जाएगा और पत्र के अंकित मूल्य की रकम में जोड़ा जाएगा।

## सारणी

वर्ष जिसके लिए ब्याज प्रोद्भूत होता है	10 रु० के अभियन वाले पत्र पर प्रोद्भूत होने वाले ब्याज की रकम (रु० में)
पहला वर्ष . . . . .	1.24
दूसरा वर्ष . . . . .	1.39
तीसरा वर्ष . . . . .	1.56
चौथा वर्ष . . . . .	1.75
पाँचवाँ वर्ष . . . . .	1.97
छठा वर्ष . . . . .	2.24

टिप्पण: किसी अन्य अभिधान के पत्र पर प्रोद्भूत होने वाले ब्याज की रकम ऊपर सारणी में विनिर्दिष्ट रकम के अनुपात में होगी।

20 समय-पूर्व भुनाना:—(1) नियम 19 में किसी बात के होते हुए भी किसी भी अभिधान का पत्र धारक या धारकों के विकल्प पर पत्र की तारीख से तीन वर्ष की समाप्ति के पश्चात् किसी भी समय कटौती करवा कर भुनाया जा सकेगा। ऐसे समय-पूर्व भुनाए जाने पर संवेद्य रकम जिसमें नियम 19 के अधीन प्रोद्भूत ब्याज भी सम्मिलित है और कटौती का समायोजन करने के पश्चात् वह होगी जो 10 रु० के अभिधान वाले पत्र के लिए नीचे सारणी में विनिर्दिष्ट है और यह किसी अन्य अभिधान के पत्र के लिए समानुपातिक दर पर होगी।

## सारणी

पत्र की तारीख से उसके भुनाए जाने की अवधि	संवेद्य रकम जिसमें ब्याज भी सम्मिलित है (रु० में)
3 वर्ष या अधिक किन्तु 3 वर्ष और 6 मास से कम . . . . .	13.20
3 वर्ष और 6 मास या अधिक किन्तु 4 वर्ष से कम . . . . .	13.85
4 वर्ष या अधिक किन्तु 4 वर्ष और 6 मास से कम . . . . .	14.50
4 वर्ष और 6 मास या अधिक किन्तु 5 वर्ष से कम . . . . .	15.20
5 वर्ष या अधिक किन्तु 5 वर्ष और 6 मास से कम . . . . .	15.90
5 वर्ष और 6 मास या अधिक किन्तु 6 वर्ष से कम . . . . .	16.65

(2) उपनियम (1) और नियम 19 में किसी बात के होते हुए भी और उपनियम (3) और (4) के अधीन रहते हुए, किसी पत्र को पत्र की तारीख से तीन वर्ष की समाप्ति के पूर्व निम्नलिखित परिस्थितियों में से किसी भी समय पूर्व भुनाया जा सकेगा अर्थात्:—

(क) धारक की या संयुक्त धारकों की दशा में दोनों धारकों की मृत्यु होने पर;

(ख) जब गिरवी इन नियमों के अनुरूप है तब ऐसे गिरवीदार द्वारा समग्रहण पर जो राजपत्रित सरकारी अधिकारी है;

(ग) न्यायालय का आदेश होने पर।

(3) यदि कोई पत्र, उपनियम (2) के अधीन पत्र की तारीख से एक वर्ष की अवधि के भीतर भुनाया जाता है तो पत्र का केवल अंकित मूल्य संवेद्य होगा और कोई ब्याज संवेद्य नहीं होगा।

(4) यदि कोई पत्र, उपनियम (2) के अधीन, पत्र की तारीख से एक वर्ष की समाप्ति के पश्चात् किन्तु तीन वर्ष की समाप्ति के पूर्व भुनाया जाता है तो भुनाया जाना कटौती पर होगा। पत्र के भुनाए जाने पर पत्र के अंकित मूल्य के समतुल्य रकम साधारण ब्याज सहित, संवेद्य होगी। ऐसे साधारण ब्याज की संगणना ऐसे पूर्ण मासों के लिए, जिनके लिए पत्र धारित किया गया है, डाकघर बचत बैंक नियम, 1965 के अधीन एकरु खातों का समय-समय पर लागू दर पर अंकित मूल्य पर की जाएगी। पूर्वांक साधारण ब्याज और नियम 19 के अधीन प्रोद्भूत होने वाले ब्याज के बीच के अंतर का कटौती समझा जाएगा।

21. भुनाए जाने का स्थान—कोई पत्र उस डाकघर से, जहाँ वह रजिस्ट्रारित हुआ है, भुनाया जा सकेगा।

परन्तु पत्र को किसी अन्य डाकघर से यदि उस डाकघर के भार-साधक अधिकारी का, उस रजिस्ट्रारण के डाकघर से पहचान पत्ती या यह सत्यापन करने पर कि भुनाने के लिए पत्र प्रस्तुत करने वाला व्यक्ति उसके भुनाने का हकदार है, समाधान हो जाता है, भुनाया जा सकेगा।

22. पत्रों का उन्मोचन—(1) किसी पत्र के अधीन वेद्य रकम को प्राप्त करने का हकदार व्यक्ति, इसके भुनाए जाने पर, इसके शेष संवाय प्राप्त करने के प्रमाण के रूप में हस्ताक्षर करेगा।

(2) किसी ऐसे अवयस्क की ओर से किये गए पत्र की दशा में जिनमें अब अवयस्कता प्राप्त कर ली है पत्र को उस व्यक्ति द्वारा स्वयं हस्ताक्षरित किया जाएगा किन्तु उसके हस्ताक्षर या तो उस व्यक्ति द्वारा जिसने इसे उसकी ओर से किये हैं या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा जिसे डाकपाल जानता है अनुप्रमाणित किए जाएंगे।

(3) नियम 29 के उपनियम (1) में विनिर्दिष्ट फीस के संवाय किए जाने पर पत्र भुनाने वाले किसी व्यक्ति को डाकघर द्वारा उन्मोचन का प्रमाणपत्र दिया जा सकेगा।

23. अवयस्क के पत्र का भुनाया जाना:—अवयस्क की ओर से पत्र को भुनाने वाला व्यक्ति अधिनियम की धारा 5 के खण्ड (ख) के यथास्थिति उपखण्ड (i) या उपखण्ड (ii) में विनिर्दिष्ट अवयस्क के माता-पिता या संरक्षक इस प्रमाण का एक प्रमाणपत्र देगा कि अवयस्क जीवित है और धन की अवयस्क की ओर से अपेक्षा है।

(2) जब नामनिर्देशित अवयस्क है तो अधिनियम की धारा 6 की उपधारा (3) के अधीन नियुक्त व्यक्ति पत्र को भुनाने समय एक प्रमाण-पत्र देगा कि अवयस्क जीवित है और धन की अवयस्क की ओर से अपेक्षा है।

24. बारिसों को संवाय:—(1) अधिनियम की धारा 7 की उप-धारा (4) के प्रयोजन के लिए नीचे नामित प्राधिकारी पत्र के धारक की मृत्यु पर प्रत्येक के सामने की गई सीमा तक उसकी विल के प्रोबेट या उसकी संपदा के प्रशासन पत्र या भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम 1925 (1925 का 39) के अधीन दिए गए उत्तराधिकार प्रमाणपत्र के प्रस्तुत किए बिना वावे को मंजूर करने के लिए सक्षम होंगे:—

प्राधिकारी का नाम	सीमा
(1) काल-वेतन-मान विभागीय उप डाकपाल . . . . .	100 रु०
(2) निम्न जयन श्रेणी में उप डाकपाल . . . . .	250 रु०
(3) (क) अराजपत्रित प्रधान डाकपाल और उप डाकपाल जो उच्चतर श्रेणी में हैं . . . . .	500 रु०

अधिकार का नाम	सं.मा
(ख) उच्चतर चयन श्रेणी में उप डाकपाल और उच्च-उच्चतर चयन श्रेणी में सहायक प्रेसिडेंसी डाकपाल	500 रु०
(4) समूह 'ख' में उप डाकपाल और उप प्रेसिडेंसी डाकपाल	2000 रु०
(5) (क) समूह 'क' या समूह 'ख' डाकपाल प्रेसिडेंसी डाकपाल और डाकटरी के अधीन/डाकघरों के ज्येष्ठ अधीक्षक	5000 रु०
(ख) डाक मकिलों के प्रधान (सहायक निवेशक/सहायक महाडाकपाल)	

25. सेना, वायु सेना और नौसेना के कार्मिकों द्वारा धारित पत्रों का भुनाया जाना :—जहाँ पत्र ऐसे व्यक्ति द्वारा धारित है जो सेना अधिनियम 1950 (1950 का 46) या वायु सेना अधिनियम 1950 (1950 का 45) या नौ सेना अधिनियम 1957 (1957 का 62) के अधीन है और ऐसे व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है या वह अभिव्यजन करता है वहाँ उस कोर, विभाग, टुकड़ी, यूनिट या पोत जिसका मृत व्यक्ति या अभिव्यजक था का यथास्थिति, कमान आफिसर या समायोजन समिति उस डाकघर के भारसाधक अधिकारी को, जहाँ पत्र रजिस्ट्रीकृत हुआ है, पत्र के अधीन देय रकम उसे संवाय करने के लिए एक अध्यापिका भेज सकेगी; और डाकघर का भारसाधक अधिकारी ऐसी अध्यापिका का अनुपालन करने के लिए तब भी बाध्य होगा चाहे पत्र के धारक की मृत्यु या अभिव्यजन के समय किसी व्यक्ति के हक में किया गया कोई नामनिर्देशन प्रयुक्त है।

स्पष्टीकरण :—उपयुक्त अध्यापिका, सेना या वायु सेना के व्यक्ति की दशा में सेना और वायुसेना (प्राइवेट सम्पत्ति का व्ययन) अधिनियम, 1950 (1950 का 40) द्वारा 3 या 4 के अधीन या नौसेना के व्यक्ति की दशा में नौसेना अधिनियम 1957 (1957 का 62) की धारा 171 या धारा 172 के अधीन की जाएगी।

26. नामनिर्देशितियों के अधिकार :—(1) पत्र के धारक की मृत्यु की दशा में, जिसकी बाबत नामनिर्देशन प्रयुक्त है, नामनिर्देशिनी, पत्र की परिपक्वता से पूर्व या पश्चात् किसी भी समय :

- (क) पत्र को भुनाने; या
- (ख) पत्र का समुचित अधिभागों में, व्यक्तिगत नामनिर्देशितियों या संयुक्त रूप से वां कयस्क नाम निर्देशितियों के पक्ष में उप-विभाजित करने,

का हकदार होगा या होगी।

(2) उपनियम (1) के प्रयोजन के लिए, उत्तरजीवी नामनिर्देशिनी रजिस्ट्रीकरण के कार्यालय के डाकपाल को धारक की मृत्यु और मृत नामनिर्देशिनी या नामनिर्देशितियों, यदि कोई है, के बारे में सबूत के साथ, एक आवेदन देगा/देंगे।

(3) यदि एक से अधिक नामनिर्देशिनी है तो, सब नाम निर्देशिनी संवाय प्राप्त करने समय या उप-विभाजन के समय पत्र का संयुक्त उन्मोचन करेंगे।

टिप्पण :—जहाँ नामनिर्देशन किसी एकल नामनिर्देशिनी या वां कयस्क नामनिर्देशितियों के पक्ष में है वहाँ रजिस्ट्रीकरण का डाकघर उस निमित्त आवेदन दिए जाने पर यथास्थिति, ऐसे नामनिर्देशिनी या संयुक्त रूप से नामनिर्देशितियों के नाम में नया पत्र जारी कर सकेगा।

27क. एक अधिभाग से दूसरे में संपरिवर्तन :—(1) कम अधिभागों के पत्र उसी सकल प्रकृत मूल्य के उससे अधिक अधिभाग के पत्र या

पत्रों में बदले जा सकेंगे या अधिक अधिभाग का पत्र उसी सकल प्रकृत मूल्य के उससे कम अधिभाग के पत्रों में बदला जा सकेगा।

परन्तु भिन्न तारीखों वाले पत्रों को उच्चतर अधिभाग के पत्र या पत्रों में बदलने के लिए मिलाया नहीं जाएगा।

(2) बदले गए पत्र या पत्रों के जारी किए जाने की तारीख वही होगी जो प्रत्यपित किए गए मूल पत्र या पत्रों की है, न कि वह तारीख जिसको पत्र बदला गया है।

28. आयकर :—आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन इन पत्रों के व्याज पर आयकर, नियम 19 में विनिर्दिष्ट अधिक प्रोद्भवन के आधार पर लगेगा किन्तु पत्र के उन्मोचन मूल्य के संवाय के समय आयकर की कोई कटौती नहीं की जाएगी।

29. फीस :—(1) निम्नलिखित संघ्यन्तारों के बारे में 500 रु० या उससे अधिक के अधिभाग के पत्र की दशा में एक रुपए की फीस और किसी अन्य मामले में 25 पैसे की फीस प्रसार्य होगी, यर्थात्

- (1) पत्र का एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को अन्तरण; जो धारक से न्यायालय को या न्यायालय के आदेश के अधीन अन्तरण से भिन्न है;
- (2) नियम 17 के अधीन पत्र की दूसरी प्रति का जारी किया जाना;
- (3) नियम 22 के अधीन उन्मोचन पत्र का जारी किया जाना;
- (4) नियम 27 के अधीन एक अधिभाग से दूसरे अधिभाग में संपरिवर्तन।

स्पष्टीकरण (1) :—खण्ड (3) के अधीन उन्मोचन प्रमाणपत्र जारी करने के लिए प्रसारित की जाने वाली फीस की सगणना, ऐसे सभी पत्रों के सकल प्रकृत मूल्य पर पूर्वक-न्यून की जाएगी, जो किसी एक आवेदन पर कट किए गए थे और जो उन्मोचन प्रमाणपत्र में सम्मिलित किए गए हैं।

स्पष्टीकरण (2) :—खण्ड (4) के अधीन संपरिवर्तन के लिए प्रसारित की जाने वाली फीस ऐसे संपरिवर्तन पर जारी किए जाने के लिए अपेक्षित पत्रों की संख्या और अधिभाग पर आधारित होगी।

(2) नामनिर्देशन के रजिस्ट्रीकरण या नामनिर्देशन में परिवर्तन या उसके रद्दकरण के लिए प्रत्येक आवेदन पर पचास पैसे की फीस प्रसार्य होगी:

परन्तु प्रथम नामनिर्देशन के रजिस्ट्रीकरण के किसी आवेदन पर कोई फीस प्रसार्य नहीं होगी।

30. डाकघर का उत्तरदायित्व :—किसी व्यक्ति द्वारा पत्र का कच्चा अधिभाग करने और इसे कटपूर्वक भुनाने से धारक को हुई हानि के लिए डाकघर उत्तरदायी नहीं होगा।

31. भूल का परिशुद्धि :—डाकघर महानिदेशक, या महा डाकपाल या डाक प्रभागों के प्रधान अपनी-अपनी अधिकारिता में, या तो स्वतंत्रता से या इन नियमों के अनुसरण में जारी किए गए पत्र में हितबद्ध किसी व्यक्ति द्वारा दिए गए आवेदन पर, उस पत्र की बाबत किसी लेखन या गणित सम्बन्धी भूल को परिशुद्ध कर सकेंगे, किन्तु यह तब जब इससे सरकार या किसी ऐसे व्यक्ति को कोई वित्तीय हानि नहीं होती है।

32. शिथिल करने की शक्ति :—जहाँ केन्द्रीय सरकार का समाधान हो जाता है कि इन नियमों के किसी उपबन्ध के प्रवर्तन में, पत्र के धारक या धारकों को अनुचित कष्ट होता है, वहाँ वह कारणों को लेखबद्ध करके आवेदन द्वारा उस उपबन्ध की अपेक्षाओं को, ऐसी रीति में, जो अधिनियम के उपबन्धों के असंगत न हों, शिथिल कर सकेगी।

[एक० सं० 3/5/81—एन एस (i)]

## प्रारूप—1

(नियम 6, 10 और 18(1) देखिए)

भारतीय डाक तार विभाग,

राष्ट्रीय बचत पत्र (छठा निर्गम) के क्रय के लिए आवेदन का प्रारूप ।

क्रम सं०.....

(1) मैं/हम राष्ट्रीय बचत पत्रों (छठा निर्गम) के क्रय के लिए जिनका व्यौजा नीचे के विवरण में दिया है, आवेदन करता हूँ/करते हैं और विवरण के स्तंभ-1 में दर्शित रकम निविदत्त करता हूँ/करते हैं—

निविदा का प्रारूप	रकम रु०	उन पत्रों का अभिक्षान संख्या जिनके लिए आवेदन किया गया है।	अपेक्षित संयुक्त पत्रों का प्रारूप (‘क’ या ‘ख’ प्रकार)	कुल अंकित मूल्य रु०
	1	2	3	5
(1) नकदी				
(2) बैंक पर लिखा गया चेक, मांगवेल ड्राफ्ट या किसी अनुमोदित स्थानीय बैंक का अवायगी आदेश, या संदाय पर्ची का संख्यांक.....तारीख .....।		10 50 100		
(3) डाकघर बचत बैंक से प्रत्याहरण के लिए आवेदन		500		
(4) पुनः विनिधान के लिए परिपक्व पत्र		1000 5000		

कुल अंकित मूल्य

\*केवल संयुक्त श्रुति की दशा में भरा जाएगा ।

(क) \*\*मेरे/हमारे नाम/नामों (मोटे अक्षरों में) उपनामों सहित,  
यदि कोई हो, मैं

\*\*एकल या संयुक्त धारकों के लिए

(ख) × अवयस्क की ओर से (मोटे अक्षरों में)-----  
× अवयस्क की ओर से क्रय के लिए अवयस्क के जन्म की  
तारीख-----

× × और अवयस्क के-----

(1) पिता, (2) माता, (3) माता या पिता में से कोई  
एक, (4) अधिक संरक्षक  
द्वारा भुनाए जा सकेंगे

× × (अनापेक्षित अनुकल्पों का या सभी मदों को यदि प्राधि-  
करण करने की बाछा नहीं है, काट दीजिए)

(क या ख में से जो अपेक्षित नहीं है उसे काट दीजिए)

(ग) ----- (सामाईटी या कम्पनी, आदि) के माध्यम से  
----- (सदस्य, आदि) के नाम में ।

× किसी सहकारी सोसाइटी, सहकारी बैंक या अनुमूचित बैंक  
के लिए—इसके ऐसे सदस्यों, प्राइकों, कर्मचारियों या ठेकेदारों  
के निमित्त जिनका धन ऐसे सोसाईटी या बैंक में निक्षेप  
के रूप में या अन्यथा है ; किसी राजपत्रित सरकारी अधि-  
कारी, किसी सरकारी कम्पनी का या किसी निगम का या  
किसी स्थानीय प्राधिकरण का कोई अधिकारी या किसी  
निगमित निकाय जैसे किसी राज्य अधिनियम के अधीन  
स्थापित और राज्य सरकार द्वारा उसके शासकीय हैमियत  
में इस निमित्त प्राधिकृत किसी विपणन समिति या भारतीय  
रिजर्व बैंक के किसी अधिकारी के लिए ।

(2) मैं/हम राष्ट्रीय बचतपत्र (छठा निर्गम) नियम, 1981 का  
पालन करने के लिए करार करना हूँ/करते हैं ।

(3) \*\*\*मुझे/हमें पहचान पर्ची की अपेक्षा है/नहीं है ।

(किसी प्राधिकृत अधिकारी या संदेश वाहक की मार्फत किसी विनिधान  
की दशा में नमूना हस्ताक्षर और पहचान चिह्न, पैरा (5) के नीचे  
दिए जाने चाहिए ।

\*\*\*जो लागू नहीं है उसे काट दीजिए ।

टिप्पण: अवयस्क की ओर से किए गए क्रय की दशा में किसी प्राधि-  
कृत व्यक्ति से भिन्न किसी व्यक्ति को, कोई पहचान पर्ची जारी नहीं की  
जाएगी ।

उपरोक्त पैरा (1) (ख) देखिए

उपरोक्त पैरा 1(ख) के अनुसार विनिधानकर्ता के हस्ताक्षर (या अंगूठे  
प्राधिकृत व्यक्ति/व्यक्तियों के हस्ता- का निशान यदि निरक्षर हो)  
और (अंगूठे का निशान नहीं) तारीख.....  
यदि कोई हो । पता-----

तारीख-----

पता-----

टिप्पण: निरक्षर आवेदक की दशा में उसके पिता का नाम दिया जाए ।

(4) पत्र और पहचान पर्चा मेरे/हमारे अधिकर्ता श्री/श्रीमती-  
..... की जिनके बारे में प्राधिकार सं० .....  
है, या संदेश वाहक को जो यह आवेदन पेश करता है, दे दिया जाए ।  
( जो शब्द लागू नहीं होने उन्हें काट दीजिए )

विनिधानकर्ता पत्रों का वैयक्तिक रूप से परिदान नहीं लेता है तो  
उस दशा में ही हस्ताक्षरित किया जाएगा या अंगूठे का निशान लगाया  
जाएगा ।

विनिधानकर्ता के हस्ताक्षर  
(या अंगूठे का निशान  
यदि निरक्षर हो)

(5) पत्र जिसका न्योरा ऊपर दिया गया है \* और पहचान पर्ची प्राप्त की।

\*यदि पहचान पर्ची जारी नहीं की जानी है तो उसे काट दीजिए।

जेल्ला या उसके अधिकर्ता  
संदेश बाहक के हस्ताक्षर  
या भंगूटे का निशान  
(प्राधिकृत अधिकर्ता की  
दशा में उसकी प्राधिकार  
संख्या दी जानी चाहिए)

पहचान के निशान।

नमूना—हस्ताक्षर।

(6) सरकारी बचत पत्र अधिनियम, 1959 की धारा 6(1) के उपबन्धों के अधीन मैं/हम ..... बचत पत्र (पत्रों), जो इस आवेदन में उल्लिखित है, का धारक इसके द्वारा नीचे वर्णित व्यक्ति (व्यक्तियों) को नामनिर्देशित करता हूँ/करते हैं जो मेरी/हमारी मृत्यु पर अन्य सभी व्यक्ति (यों) को पवर्जित करते हुए बचत पत्र (पत्रों) के और उस पर देय रकम के हकदार हो जाएंगे।

क्रम सं०	नामनिर्देशिती का नाम	पूरा पता	प्रवयस्क की दशा में नामनिर्देशिती के जन्म की तारीख
----------	----------------------	----------	--

उपरोक्त क्रम संख्यांक (संख्यांक).....पर नामनिर्देशिती प्रवयस्क है/हैं, मैं/हम श्री, श्रीमती, कुमारी.....(नाम और पूरा पता) को, नामनिर्देशिती (नामनिर्देशितियों) की प्रवयस्कता के दौरान मेरी/हमारी मृत्यु हो जाने की दशा में देय राशि प्राप्त करने वाले व्यक्ति के रूप में नियुक्त करता हूँ।

सारी के हस्ताक्षर और पूरा पता	धारक के हस्ताक्षर (या भंगूटे का निशान यदि निरक्षर हो)
-------------------------------	---

आकषर द्वारा पूरा किया जाएगा

जाने किए गए निर्गमन मूल्य भुनाए जाने पत्रों का क्रम सं०	आकषर की तारीख	आकषर के टिप्पणियाँ जैसे कि अन्तरण, प्रति आदि जारी करना और आकषर के आकषर
---	---------------	--

राष्ट्रीय बचत पत्र (छटा निर्गम) की कुल संख्या.....

तारीख..... 19

आकषर के हस्ताक्षर

प्ररूप 2

(नियम 18(1) देखिए)

भारतीय आकषर विभाग

क्रम सं०.....

सरकारी बचत पत्र अधिनियम, 1959 की धारा 6 के अधीन नाम-निर्देशन के लिए आवेदन का प्ररूप।

(यह प्ररूप धारक/धारकों द्वारा भरा जाएगा और उस कार्यालय के आकषर को, जहाँ पत्र रजिस्ट्रीकृत हुए हैं, पत्रों सहित दिया जाएगा)

सेवा में,

आकषर,

.....

सरकारी बचत पत्र अधिनियम, 1959 की धारा 6(1) के उपबन्धों के अधीन मैं/हम.....! जो बचत पत्र/पत्रों, जिनका न्योरा आगे दिया गया है, का धारक हूँ/हैं इसके द्वारा निम्न वर्णित व्यक्ति/व्यक्तियों को, जो मेरी/हमारी मृत्यु पर बचत पत्र/पत्रों और उन पर देय राशि जो संदाय होनी है, का के अन्य सभी व्यक्तियों को अपवर्जित करते हुए हकदार होगा/होगे, नामनिर्देशित करता हूँ/करते हैं। मैं/हम इसके द्वारा घोषित करता हूँ/करते हैं कि मैंने/हमने इन पत्रों की बाबत अब तक कोई नामनिर्देशन नहीं किया है। (पत्र संलग्न है)।

क्रम सं०	नामनिर्देशिती का नाम	पूरा पता	प्रवयस्क की दशा में नामनिर्देशिती के जन्म की तारीख
----------	----------------------	----------	--

उपरोक्त क्रम सं०.....पर नामनिर्देशिती प्रवयस्क है/हैं, मैं/हम श्री/श्रीमती/कुमारी.....(नाम और पूरा पता) को, नामनिर्देशिती। नामनिर्देशितियों की प्रवयस्कता के दौरान मेरी/हमारी मृत्यु हो जाने की दशा में उस पर देय राशि को बसूल करने वाले व्यक्ति के रूप में नियुक्त करता हूँ/करते हैं।

पत्रों का क्रम संख्यांक	अधिधान जारी करने की तारीख	जारी करने वाला कार्यालय
-------------------------	---------------------------	-------------------------

पता

प्रवयगीय,

(निरक्षर धारक की दशा में पिता का नाम दिया जाना चाहिए)

साक्षी

धारक/धारकों के हस्ताक्षर (भंगूटे का निशान यदि निक्षर हो/हों)

नाम

(1)

पता

नाम

(2)

पता

ध्यान दीजिए—निरक्षर धारक की दशा में साक्षी के व्यक्ति होंगे जिनके हस्ताक्षर आकषर में हैं।

नामनिर्देशन को स्वी-कार करने वाले आकषर का आवेदन

आकषर की तारीख स्टाम्प

प्रधान/उप आकषर के हस्ताक्षर

## प्रारूप 4

[नियम 18(4) देखिए]

भारतीय डाक तार विभाग

क्रम संख्या . . . . .

सरकारी बचत पत्र अधिनियम, 1959 की धारा 6 के अधीन बचत पत्रों की बाबत पूर्वतन किए गए नामनिर्देशन के रद्दकरण या उममें परिवर्तन के लिए आवेदन का प्रारूप।

(यह प्रारूप धारक/धारकों द्वारा भरा जाएगा और उस कार्यालय के डाकपाल को जहाँ पत्र रजिस्ट्रीकृत हुआ है पत्र सहित दिया जाएगा)। सेवा में

डाकपाल

डाक टिकटों के लिए, जगह

सरकारी बचत पत्र अधिनियम, 1959 की धारा 6(1) के उपबन्धों के अधीन मैं/हम, . . . . . जो बचत पत्र, जिनका न्यौरा आगे दिया गया है, का धारक हूँ/हैं, इसके द्वारा इन पत्रों, जो आपके कार्यालय में संख्यांक . . . . . तारीख . . . . . के अधीन रजिस्ट्रीकृत हैं, की बाबत अपने द्वारा किए गए पूर्वतन नामनिर्देशन की रद्द करता हूँ/करते हैं।

\*रद्द किए गए नामनिर्देशन के स्थान पर मैं/हम निम्नवर्णित व्यक्ति/व्यक्तियों को नामनिर्दिष्ट करता हूँ/करते हैं जो मेरी/हमारी मृत्यु पर अन्य सभी व्यक्तियों को अपवर्जित करते हुए पत्र/पत्रों और उन पर देय राशि जो संदाय होनी है का/के हकदार होगा/होंगे।

क्रम सं०	नामनिर्देशित/नाम निर्देशितियों का/के नाम	पूरा पता	अवयस्क की वंशा में नामनिर्देशितों के जन्म की तारीख

केवल परिवर्तन करने की

वंशा में भरा जाएगा।

उपरोक्त क्रम संख्या . . . . . पर नामनिर्देशित अवयस्क है/हैं, मैं/हम श्रीमती/कुमारी . . . . . (नाम और पूरा पता) को नामनिर्देशित नामनिर्देशितियों की अवयस्कता के दौरान मेरी/हमारी मृत्यु हो जाने की वंशा में, उस पर देय राशि को वसूल करने वाले व्यक्ति के रूप में नियुक्त करता हूँ/करते हैं।

पत्र संलग्न हैं।

पत्रों का क्रम संख्यांक अधिधान	जारी करने की तारीख जारी करने वाला कार्यालय

पता : अवयस्क

(निरक्षर धारक की वंशा में धारक के हस्ताक्षर पता का नाम दिया जाता चाहिए) (यदि निरक्षर हो तो घंठे का निषान)

साक्षी :

नाम --

-- (1)

पता --

नाम --

-- (2)

पता --

106 GI/81—2

ध्यान दीजिए—निरक्षर धारकों की वंशा में साक्षी के व्यक्ति होने जिनके हस्ताक्षर डाकपाल से हैं।

नामनिर्देशन की स्वीकार करने वाले

डाकपाल का आदेश

डाकपाल की तारीख सहित स्टाम्प

प्रधान/उप डाकपाल के हस्ताक्षर

ए० म० निवारो, मंगुलन सचिव  
[फ० म० 3/5/81 एन एम(i)]

## MINISTRY OF FINANCE

(Department of Economic Affairs)

## NOTIFICATION

New Delhi, the 24th April, 1981

**G.S.R. 309(E).**—In exercise of the powers conferred by section 12 of the Government Savings Certificates Act, 1959 (46 of 1959), the Central Government hereby makes the following rules, namely:—

1. Short title, commencement and application.—(1) These rules may be called the National Savings Certificates (VI Issue) Rules, 1981.

(2) They shall come into force on the 1st day of May, 1981.

(3) They shall apply to the National Savings Certificates (VI Issue).

2. Definitions.—In these rules, unless the context otherwise requires—

(i) "Act" means the Government Savings Certificates Act, 1959 (46 of 1959);

(ii) "Certificate" means the National Savings Certificate (VI Issue);

(iii) "Co-operative Society" means a society registered or deemed to have been registered under the Co-operative Societies Act, 1912 (2 of 1912) or under any other law for the time being in force;

(iv) "Corporation" means a corporation established by or under any law for the time being in force, but does not include a company;

(v) "Form" means a form appended to these rules;

(vi) "Government Company" means a company as defined in section 617 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956);

(vii) "Identity Slip" means an identity slip issued to a holder of a certificate under rule 12;

(viii) "Local Authority" means a municipal corporation, municipal committee, district board, body of port commissioners or other authority legally entitled to or entrusted by the Government with the control or management of a municipal or local fund;

(ix) "Old Certificate" means a certificate issued under the Post Office Savings Certificates Rules, 1960, or the National Savings Certificates (First Issue) Rules, 1965, or the National Savings Certificates (IV Issue) Rules, 1970 or the National Savings Certificates (V Issue) Rules, 1973, or a Bond issued under the National Development Bonds Rules, 1977;

(x) "Post Office" means any post office in India doing Savings Bank work.

3. Denominations in which certificates shall be issued.—The National Savings Certificates (VI Issue) shall be issued in denominations of Rs. 10, Rs. 50, Rs. 100, Rs. 500, Rs. 1,000 and Rs. 5,000.

4. Types of Certificates and Issue thereof.—(1) The Certificates shall be of the following types, namely:—

(a) Single Holder Type Certificates;

(b) Joint 'A' Type Certificates; and

(c) Joint 'B' Type Certificates.

(2) (a) Single Holder Type Certificates may be issued to an adult for himself or on behalf of a minor or to a minor.

(b) Joint 'A' Type Certificates may be issued to two adults payable to both holders jointly or to the survivor.

(c) Joint 'B' Type Certificates may be issued jointly to two adults payable to either of the holders or the survivor.

5. Purchase of Certificates.—Certificates may be purchased for any amount.

6. Procedure for purchase of certificates.—Any person desiring to purchase a certificate shall present at a post office on or after the 1st day of May, 1981 an application in Form I (obtainable free of cost at all cost offices) either in person or through his messenger or through an authorised agent of the Small Savings Schemes.

7. Purchase of Certificates on behalf of others.—A person or body specified in column I of the Table below may purchase certificate(s) on behalf of persons specified against his or its name in the corresponding entry in column II of the said Table :

Provided that the persons specified in the said column II are eligible under these rules to purchase certificates.

TABLE

I	II
Person or body who can purchase	on behalf of
(i) an adult	a minor
(ii) a Co-operative society including a co-operative bank, or a scheduled bank.	its members, clients, employees or contractors whose monies are held as deposit or otherwise with such society or bank.
(iii) A Gazetted Government officer, an officer of a Government company or of a corporation or of a local authority, or an officer of a corporate body like a marketing committee established under a State Act and authorised by the State Government in this behalf, in his official capacity or the Reserve Bank of India.	persons whose monies are held as deposit or otherwise with such officer or the Reserve Bank.

8. Legal Tender.—Payment for the purchase of a certificate may be made to a post office in any of the following modes, namely :—

- cash ;
- a cheque, pay order or demand draft ;
- duly signed withdrawal form together with the pass book for withdrawal from the post office savings bank account ;
- Surrender of a matured old certificate duly discharged as follows— "Received payment through issue of fresh certificate vide application attached".

9. Issue of certificates.—(1) On payment being made under rule 8, except where payment is made by a cheque, pay order or demand draft, a certificate shall normally be issued immediately, and the date of such certificate shall be the date of payment.

(2) Where payment for the purchase of a certificate is made by a cheque, pay order or demand draft, the certificate shall not be issued before the proceeds of the cheque, pay order or demand draft, as the case may be, are realised and

the date of such certificate shall be the date of encashment of the cheque, pay order or demand draft, as the case may be.

(3) If for any reason a certificate cannot be issued immediately, a provisional receipt shall be given to the purchaser which may later be exchanged for a certificate and the date of such certificate shall be as specified in sub-rule (1) or sub-rule (2), as the case may be.

10. Certificate in lieu of proceeds of old certificate.—A holder of an old certificate entitled to encash that certificate may make an application in Form 1 for the grant of a certificate under these rules; on receipt of such an application, there shall be issued to the applicant a certificate under these rules, the date of issue being the date on which the old certificate duly discharged is presented.

11. Irregular holding.—(1) Any certificate purchased or acquired in contravention of these rules shall be encashed by the holder as soon as the fact of the holding being in contravention of these rules is discovered and no interest shall be paid on any holding in contravention of these rules.

(2) If any interest has been paid on any holding which is in contravention of these rules, it shall be forthwith refunded to the Government failing which the Government shall be entitled to recover the amount involved from any money payable by the Government to the investor or as an accrual of land revenue.

12. Identity Slip.—(1) If a request for the issue of an identity slip is made at any time by an individual adult holder of a certificate including a holder on behalf of a minor or by joint holders to the post office where the certificate stands registered, an identity slip shall be issued to such holder or holders on his or their signing the identity slip.

(2) The identity slip shall be surrendered at the time of the final discharge of the certificate or in case of its loss, a declaration of such loss shall be furnished to the post office in the form laid down by the Director General, Posts and Telegraphs.

13. Transfer from one post office to another.—(1) A certificate may be transferred from a post office at which it stands registered, to any other post office on the holder or holders making an application in the form laid down by the Director General, Posts and Telegraphs, at either of the two post offices.

(2) Every such application shall be signed by the holder or holders of the certificate :

Provided that in the case of a Joint 'A' Type Certificate or a Joint 'B' Type Certificate, the application may be signed by one of the joint holders if the other is dead.

14. Transfer of certificate from one person to another.—A certificate may be transferred with the previous consent in writing of an officer of the post office as specified below (hereinafter referred to in these rules as authorised Postmaster).

Cases in which transfer can be sanctioned.	Designation of the officer competent to grant permission for transfer.
(a) (i) From the name of a deceased holder to his heir.	Head Postmaster or sub-Postmaster of the post office where the certificate stands registered.
(iii) From a holder to a court of law, or to any other person under the orders of a court of law.	
(iii) From a single holder to the names of two joint holders of whom the transferer shall be one.	
(iv) From joint holders to the name of one of the joint holders.	
(b) All other cases	Head postmaster

(2) An authorised Postmaster shall give his consent to the transfer of a certificate only if the following conditions are satisfied, namely:—

(a) the transferee is eligible under these rules purchase certificates ;

(b) the transfer is made after the expiry of a period of at least one year from the date of the certificate or where the transfer is sought before the expiry of such period, the transfer falls under any of the following categories, namely:—

(i) transfer to a near relative out of natural love and affection;

Explanation.—For the purposes of this rule, "near relative" means husband, wife, lineal ascendant or descendant, brother or sister.

(ii) transfer in the name of the heir of the deceased holder ;

(iii) transfer from a holder to court of law or to any other person under the orders of a court of law;

(iv) transfer in accordance with rule 16; and

(v) transfer in the name of the survivor in the event of the death of one of the joint holders.

(c) An application for the transfer is made in the form laid down by the Director General, Post and Telegraphs and is signed by the holder or holders of the certificate :

Provided that in the case of a Joint 'A' Type Certificate or a Joint 'B' Type Certificate, the application may be signed by one of the holders if the other is dead.

(3) Without prejudice to the provisions of sub-rule (2), an authorised Postmaster shall give his consent to the transfer of a certificate held on behalf of a minor only if at the time of the proposed transfer, a parent or the guardian referred to in sub-clause (i) or, as the case may be, sub-clause (ii), of clause (b) of section 5 of the Act, certifies in writing, that the minor is alive and that such transfer is in his interest.

(4) In every case of transfer, other than a transfer under rule 16, the original certificate shall be duly discharged and the new certificate bearing the same date as that of the original certificate surrendered shall be issued in the name of the transferee.

15. Transfer from single holding to joint holding and vice-versa.—Subject to the provisions contained in sub-rule (1) of rule 14, on an application to this effect being made—

(a) a certificate in the name of a single holder may be transferred jointly in the names of the holder and any other person ;

(b) a certificate in the names of joint holders may be transferred to the name of one of the joint holders.

16. Pledging of certificate.—(1) On an application being made in the form laid down by the Director General, Posts and Telegraphs, by the transferer and the transferee, the Postmaster of the office of registration may, at any time, permit the transfer of any certificate as security to—

(a) the President of India or Governor of a State in his official capacity ;

(b) the Reserve Bank of India or a scheduled bank, or, a co-operative society including a co-operative bank;

(c) a corporation or a Government company; and

(d) a local authority;

Provided that the transfer of a certificate purchased on behalf of a minor shall not be permitted under this sub-rule unless the parent or the guardian of the minor referred to in sub-clause (i) or, as the case may be sub-clause (ii), of clause (b) of section 5 of the Act certifies, in writing, that the minor is alive and the transfer is for the benefit of the minor.

(2) When any certificate is transferred as security under sub-rule (1), the Postmaster of the office of registration shall make the following endorsement on the certificate, namely:—

"Transferred as security to .....

(3) Except as otherwise provided in these rules, the transferee of a certificate under this rule shall, until it is re-transferred under sub-rule (4), be deemed to be the holder of the certificate.

(4) A certificate transferred under sub-rule (2) may, on the written authority of the pledgee, be re-transferred with the previous sanction in writing of the authorised Postmaster and when any such re-transfer is made, the Postmaster of the office of registration shall make the following endorsement on the certificate, namely—

"Re-transferred to .....

Note 1.—A Gazetted officer of the Government accepting the certificate as security under sub-rule (1) or releasing the pledge under sub-rule (4) on behalf of the President or the Governor of a State, shall certify that he is duly authorised under his dated signature and seal of office that as a duly or deeds on behalf of the President of India or the Governor of the State, giving the particulars of the number and date of the notification of the Government authorising him in this behalf.

Note 2.—An officer of the Reserve Bank of India or a scheduled bank or a co-operative society including a co-operative bank, a corporation or a Government company or a local authority, as the case may be, accepting the certificate as security under sub-rule (1) or releasing the pledge under sub-rule (4) on behalf of the respective institution, shall certify under his dated signature and seal of office that he is duly authorised under the articles of the said institution, to execute such instruments or deeds on its behalf.

(5) Where as a result of several endorsements made under sub-rules (2) and (4) on a certificate, no space is left for making further endorsements of a like character on that certificate, a fresh certificate may be issued by the Postmaster of the office of registration in lieu of such certificate.

(6) A fresh certificate issued under sub-rule (5) shall be treated as equivalent to the certificate in lieu of which it has been issued for all the purposes of these rules.

17. Replacement of lost or destroyed certificate.—(1) If a certificate is lost, stolen, destroyed, mutilated or defaced, the person entitled thereto may apply for the issue of a duplicate certificate to the post office, where the certificate is registered or to any other post office in which case the application will be forwarded to the post office of registration.

(2) Every such application shall be accompanied by—

(a) a statement showing particulars, such as, number, amount and date of the certificate and the circumstances attending such loss, theft, destruction, mutilation or defacement;

(b) an identity slip, if any.

(3) If the officer in charge of the post office of registration is satisfied of the loss, theft, destruction, mutilation or defacement of the certificate, he shall issue a duplicate certificate on the applicant's furnishing an indemnity bond in the form laid down by the Director General, Posts and Telegraphs with one of more approved sureties or with a bank's guarantee :

Provided that where the face value or the aggregate face value of the certificate of certificate, lost, stolen, destroyed, mutilated or defaced is Rs. 500 or less, a duplicate certificate or certificates may be issued on the applicant furnishing an indemnity bond without any such surety or guarantee :

Provided further that where such application is made with respect to a certificate mutilated or defaced, of whatever face value, a duplicate certificate may be issued without any such indemnity bond, surety or guarantee, if the certificate mutilated or defaced and the identity slip, if any, are surrendered and the certificate is capable of being identified as the one originally issued.

(4) A duplicate certificate issued under sub-rule (3) shall be treated as equivalent to the original certificate for all the purposes of these rules except that it shall not be encashable at a post office other than the post office at which such certificate is registered without previous verification.

18. Nomination.—(1) Subject to the provisions of sub-rules (2) to (6), the single holder or joint holders of a certificate may, by filling in necessary particulars in Form 1 at the time of purchasing the certificate, nominate any person who, in the event of death of the single holders or both the joint holders, as the case may be, shall become entitled to the certificate and to the payment of the amount due thereon. If such nomination is not made at the time of purchasing the certificate, it may be made by the single holder, the joint holders or the surviving joint holder, as the case may be, at any time after the purchase of the certificate but before its maturity, by means of an application in Form 2 to the Postmaster of the office at which the certificate stands registered.

(2) There shall not be more than one nominee, except in cases where the denomination of a certificate is Rs. 500 or more.

(3) No nomination shall be made in respect of a certificate applied for and held by or on behalf of a minor.

(4) A nomination made by the holder or holders of a certificate under this rule may be cancelled or varied by submitting an application in Form 3 affixing postage stamps of the value specified in sub-rule (2) of rule 29 together with the certificate to the Postmaster of the post office at which the certificate stands registered.

(5) Separate applications for nomination or cancellation of a nomination or variation of a nomination shall be made in respect of certificates registered on different dates.

(6) The nomination or the cancellation of a nomination or the variation of a nomination shall be effective from the date it is registered in the post office, which date shall be noted on the certificate.

19. Encashment on maturity.—The maturity period of a certificate of any denomination shall be six years commencing from the date of the certificate. The amount, inclusive of interest, payable on encashment of a certificate at any time after the expiry of its maturity period shall be Rs. 20.15 for the denomination of Rs. 10 and at proportionate rate for any other denomination. The interest as specified in the Table below shall accrue to the holder or holders of the certificate at the end of each year and the interest so accruing at the end of each year upto the end of the fifth year shall be deemed to have been re-invested on behalf of the holder and aggregated with the amount of face value of the certificate.

TABLE

The year for which interest accrues	Amount of interest (Rs.) accruing on certificates of Rs. 10 denomination.
First year	1.24
Second year	1.39
Third year	1.56
Fourth year	1.75
Fifth year	1.97
Sixth year	2.24

NOTE : The amount of interest accruing on a certificate of any other denomination shall be proportionate to the amount specified in the Table above.

20. Premature encashment.—(1) Notwithstanding anything contained in rule 19, a certificate of any denomina-

tion may, at the option of the holder or holders, be encashed at a discount at any time after the expiry of three years from the date of the certificate. On such premature encashment, the amount payable inclusive of interest accrued under rule 19 and after adjustment of discount, shall be as specified in the Table below for a certificate of Rs. 10 denomination and at proportionate rate for a certificate of any other denomination

TABLE

Period from the date of the certificate to the date of its encashment	Amount payable, inclusive of interest (Rs.)
(1)	(2)
	(Rs.)
3 years or more, but less than 3 years and 6 months . . . . .	13.20
3 years and 6 months, or more, but less than 4 years . . . . .	13.85
4 years or more, but less than 4 years and 6 months . . . . .	14.50
4 years and 6 months, or more, but less than 5 years . . . . .	15.20
5 years or more, but less than 5 years and 6 months . . . . .	15.90
5 years and 6 months, or more, but less than 6 years . . . . .	16.65

(2) Notwithstanding anything contained in sub-rule (1) and rule 19, and subject to sub-rules (3) and (4), a certificate may be prematurely encashed before the expiry of three years from the date of the certificate in any of the following circumstances, namely :—

- on the death of the holder or both the holders in case of joint holders ;
- on forfeiture by a pledgee being a Gazetted Government officer, when the pledge is in conformity with these rules ;
- when ordered by a court of law.

(3) If a certificate is encashed under sub-rule (2) within a period of one year from the date of the certificate, only the face value of the certificate shall be payable and no interest shall be payable.

(4) If a certificate is encashed under sub-rule (2) after the expiry of one year but before the expiry of three years from the date of the certificate, the encashment shall be at a discount. On encashment of the certificate, an amount equivalent to the face value of the certificate together with simple interest shall be payable. Such simple interest shall be calculated on the face value, at the rate applicable from time to time to single accounts under the Post Office Savings Bank Rules, 1965, for the complete months for which the certificate has been held. The difference between the aforesaid simple interest and the interest accruing under rule 19 shall be deemed to be the discount.

21. Place of encashment.—A Certificate shall be encashable at the post office at which it stands registered ;

Provided that a certificate may be encashed at any other post office if the officer-in-charge of that post office is satisfied on production of identity slip or on verification from the office of its registration that the person presenting the certificate for encashment is entitled thereto.

22. Discharge of certificate—(1) The person entitled to receive the amount due under a certificate shall, on its encashment, sign on the back thereof in token of having received the payment.

(2) In the case of a certificate purchased on behalf of a minor who has since attained majority, the certificate shall be signed by such a person himself, but his signature shall be attested either by the person who purchased it on his behalf or by any other person who is known to the Postmaster.

(3) A certificate of discharge may be issued by the post office to any person encashing a certificate on payment of the fee specified in sub-rule (1) of rule 29.

23. Encashment of minor's certificate—A person encashing a certificate on behalf of a minor shall furnish a letter from the parent or the guardian of the minor referred to in sub-clause (i), or as the case may be, sub-clause (ii), of clause (b) of section 5 of the Act, to the effect that the minor is alive and that the money is required on behalf of the minor.

(2) When the nominee is a minor, the person appointed under sub-section (3) of section 6 of the Act while encashing the certificate, shall furnish a certificate that the minor is alive and that the money is required on behalf of the minor.

24. Payment to heirs—(1) For the purposes of sub-section (4) of section 7 of the Act the authorities named below shall be competent to sanction claims upto the limit noted against each on the death of the holder of the certificate, without production of the probate of his will or letters of administration of his estate or succession certificate granted under the Indian Succession Act, 1925 (39 of 1925) :—

TABLE

Name of authority	Limit
(1)	(2)
(i) Time Scale Departmental Sub-postmaster	Rs. 100
(ii) Sub Postmaster in Lower Selection Grade	Rs. 250
(iii) (a) Non-Gazetted Head Postmaster and Sub-Postmaster in Higher Selection Grade	Rs. 500
(b) Deputy Postmaster in Higher Selection Grade and Assistant Presidency Postmaster in Higher Selection Grade.	
(iv) Deputy Postmaster in Group 'B' and Deputy Presidency Postmaster	Rs. 2,000
(v) (a) Group 'A' or Group 'B' Postmaster/Presidency Postmaster and Superintendent of Post Offices/Senior Superintendent of Post Offices.	Rs. 5000
(b) Heads of Postal Circles Assistant Director/ Assistant Postmaster General)	

25. Encashment of Certificate held by Army, Air Force and Navy Personnel.—Where a certificate is held by a person who is subject to the Army Act, 1950 (46 of 1950) or the Air Force Act, 1950 (45 of 1950) or the Navy Act, 1957 (62 of 1957), and such person dies or deserts, the Commanding Officer of the Corps, department, detachment unit or ship to which the deceased or deserter belonged or the Committee of Adjustment, as the case may be, may send a requisition to the officer in charge of the post office where the certificate stands registered to pay to him or it, the amount due under the certificate; and the officer in charge of the post office shall be bound to comply with such requisition even though there is in force at the time of death or desertion of holder of the certificate a nomination made in favour of any person.

Explanation : The aforesaid requisition must be made under section 3 or section 4 of the Army and Air Force (Disposal of Private Property) Act, 1950 (40 of 1950), in the case of a person belonging to the Army or the Air Force, or under section 171 or section 172 of the Navy Act, 1957 (62 of 1957) in the case of a person belonging to the Navy.

26. Rights of nominees—(1) In the event of the death of the holder of a certificate, in respect of which a nomination is in force, the nominee or nominees shall be entitled at any time before or after the maturity of the certificate to :—

(a) encash the certificate; or

(b) sub-divide the certificate in appropriate denominations in favour of individual nominees or two adult nominees jointly.

(2) For the purpose of sub-rule (1), the surviving nominee or nominees shall make an application to the Postmaster of the office of registration, supported by proof of death of the holder and of deceased nominee or nominees, if any.

(3) If there are more nominees than one, all the nominees shall give a joint discharge of the certificate at the time of receiving payment or sub-division.

Note—When there is a nomination in favour of a single nominee or two adult nominees the post office of registration may, on an application made in that behalf, issue a fresh certificate in the name of such nominee or nominees jointly as the case may be.

27. Conversion from one denomination to another—(1) Certificates of lower denomination may be exchanged for a certificate or certificates of higher denomination of the same aggregate face value or a certificate of higher denomination may be exchanged for certificates of lower denomination of the same aggregate face value :

Provided that certificates bearing different dates shall not be combined for being exchanged for certificate or certificates of higher denomination.

(2) The date of the certificate or certificates issued in exchange shall be the same as that of the original certificate or certificates surrendered and not the date on which the exchange is made.

28. Income-tax—Interest on these certificates shall be liable to tax under the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), on the basis of the annual accrual specified in rule 19, but no tax shall be deducted at the time of payment of discharge value.

29. Fees.—(1) A fee of rupee one in the case of a certificate of the denomination of Rs. 500 or above and a fee of twenty-five paise in any other case shall be chargeable in respect of the following transactions, namely :—

(i) transfer of certificate from one person to another, other than a transfer from the holder to a court of law or under the orders of a court of law;

(ii) issue of a duplicate certificate under rule 17;

(iii) issue of a certificate of discharge under rule 22;

(iv) conversion from one denomination to another under rule 27.

Explanation—(1) The fee to be charged for the issue of a certificate of discharge under clause (iii) shall be calculated separately on the aggregate face value of all certificates which were purchased on any one application and which are included for discharge certificate.

Explanation—(2) The fee to be charged for a conversion under clause (iv) shall be based on the number and denomination of the certificates required to be issued on such conversion.

(2) A fee of fifty paise shall be chargeable on every application for registration of nomination, or of any variation in nomination or cancellation thereof :

Provided that no fee shall be charged on an application for registration of the first nomination.

30. Responsibility of the Post Office—The post office shall not be responsible for any loss caused to a holder by any person obtaining possession of a certificate and fraudulently encashing it.

31. Rectification of mistakes—The Director General, Posts and Telegraphs or the Postmasters General or Heads of Postal Divisions in their respective jurisdictions, may either suo motu or upon an application by any person interested in any certificate issued in pursuance of these rules, rectify any clerical or arithmetical mistakes with respect to that certificate, provided that it does not involve any financial loss to the Government or to any such person.

32. Power to relax—Where the Central Government is satisfied that the operation of any of the provisions of these rules causes undue hardship to the holder or holders of a certificate, it may, by order, for reasons to be recorded in writing, relax the requirements of that provision in a manner not inconsistent with the provisions of the Act.

#### FORM 1

[See Rule 6, 10, and 18(1)]

#### INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT

Form of Application for the purchase of National Savings Certificates (VI Issue)

Serial No. ....

(1) I/We hereby apply for the purchase of National Savings Certificates (VI Issue) detailed in the statement below and tender the amount shown in column 1 of the statement.

Form of tender	Amount	Deno- mina- tion of certi- ficates applied for	No. of certifi- cates requi- red	*Type of Joint certifi- cates requi- red (‘A’ or ‘B’ type)	Total Face value
	Rs.	Rs.			Rs.
	1	2	3	4	5
(i) Cash					
(ii) Cheque, de- mand draft or an appro- ved local Bank's Pay order or pay slip No. Dt. ... on Bank.		10  50 100 500			
(iii) application for withdrawal from Post Office Savings Bank		1000			
(iv) Matured certi- ficates for re- investment		5000			

TOTAL FACE VALUE

\*To be filled in only in case of joint holding.

(a) \*\*In my/our name(s).....  
(in Block Capitals)

with aliases, if any.

\*\* For single or joint holder.

(b) .. On behalf of minor.....  
(Block Capitals)

.. For purchase on behalf of minor

Date of birth of minor.....

‡To be made encashable by the minor's

(i) Father, (ii) Mother, (iii) Either Parent, (iv) Legal Guardian.

‡(Cross out the alternative not required or all the items, if it is not desired to make an authorisation).

[Cross out (a) or (b) whichever is not required]].

at (c) In the name of.....(members etc.)  
through.....(society or company, etc.)

at (For a co-operative society, co-operative bank or a scheduled bank, on behalf of its members, clients, employees or contractors, whose monies are held as deposit or otherwise with such society or bank; for a gazetted Government Officer, an officer of a Government company or of a corporation or of a local authority, or an officer of a corporate body like a marking committee established under a State Act and authorised by the State Government in this behalf, in his official capacity, or the Reserve Bank of India.

(2) I/We hereby agree to abide by the National Savings Certificates VI Issue) Rules, 1981.

(3)\*\*\*I/We do/do not require identity slip. (In case of an investment through an authorised agent or a messenger, specimen signature(s) and marks of identification should be given below paragraph (5)

\*\*\*Cross out whichever is not applicable.

Note—No Identity slip shall be issued to a person other than the one authorised vide paragraph 1(b) above in case of purchase on behalf of a minor.

.....  
Signature Signature

(not thumb impression of the (or thumb impression if illi-  
person(s) authorised if any, terated) of investor  
per paragraph 1(b) above.

Date ..... Date.....

Address ..... Address .....

Note—In case of an illiterate applicant the father's name may be given.

(4) The certificate(s) and the identity slip may be made over to my/our agent Shri/Smt..... Authority No.....or messenger who presents this application.

(cross out words not applicable.)

\*To be signed or thumb impression affixed only when the investor does not take delivery of certificates personally.

\*Signature (or thumb impression if illiterate) of investor.

Date .....

(5) Received the certificates detailed above and identity slip.

£ Cross out, if the identity slip is not to be issued.

Signature or thumb impression of purchaser or his agent/messenger. (In case of authorised agent his Authority No. should be given).

#### Marks of identification.

Specimen Signature.

(6) Under provisions of section 6(1) of the Government Savings Certificates Act, 1959, I/We.....the holder(s) of Savings Certificate(s) mentioned in this application hereby nominate the person(s) mentioned below who shall, on my/our death, become entitled to the Savings Certificate(s) and the amount due thereon to the exclusion of all other person(s) :—

Serial No.	Name of the Nominee(s)	Full Address	Date of birth of nominee in case of minor.
(1)			
(2)			
(3)			

As the nominee(s) at serial .....above is/are minor(s), I/We appoint Shri/Smt./Kumari..... (name and full address) as the person to recover the amount due thereon in the event of my/our death during the minority of the nominee(s).

Signature and full address of witness      Signature (or thumb impression if illiterate) of holder(s)

To be completed by the Post Office

Sl. No.	Issue price of Rs.	Date of encashment	Initials of Post Master	Remarks like transfer, Issue of duplicates etc. & initials of Post Master.
1	2	3	4	5

Total number of National Savings Certificates (VI Issue) .....

Signature of Postmaster

Date.....19..

FROM 2

[See Rule 18(1)]

#### INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT

Serial No.....

#### FORM OF APPLICATION FOR NOMINATION UNDER SECTION 6 OF THE GOVERNMENT SAVINGS CERTIFICATES ACT, 1959

(This form will be filled in by the holder/s and submitted with the certificates to the Postmaster of the office where the certificates stand registered)

To  
The Postmaster,

Under provisions of section 6 (1) of the Government Savings Certificates Act, 1959, I/We.....the holders of Savings Certificates detailed on the reverse, hereby nominate the persons mentioned below, who shall, on my/our death, become entitled to the Savings Certificate/s and to be paid the sum due thereon to the exclusion of all other persons. I/We hereby declare that I/We have not so far made any nomination in respect of these certificates. The certificates are enclosed.

Sl. No.	Name of the nominee	Full address	Date of birth of nominee in case of minor.
(1)			
(2)			
(3)			

As the nominee/s at serial .....above is/are minor/s I/We appoint Shri /Smt./Kumari..... (name and full address) as the person to recover the sum due thereon in the event of my/our death during the minority of the nominee/s.

S. Nos.      Denomination      Date of Issue      Office of issue of Certificates  
(1)  
(2)  
(3)  
Address :—

(In case of illiterate holder father's name should be given)

Yours faithfully  
Signature (or thumb impression, if illiterate) of holder/s.

Witnesses —	Sl Nos. of Cer- tificates	Denomi- nation	Date of issue	Office of issue
Name				
Address (1)				
Name				
Address (2)				

N.B.— In the case of illiterate holders, the witnesses shall be persons whose signatures are known to the post office.

Order of the Postmaster accepting the nomination.

.....

Date stamp  
of  
PostOffice

Signature of Head/Sub-postmaster

FORM 3  
[See Rule 18(4)]

INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT

Serial No.....

FORM OF APPLICATION FOR CANCELLATION OR VARIATION OF NOMINATION PREVIOUSLY MADE IN RESPECT OF SAVINGS CERTIFICATES UNDER SECTION 6 OF THE GOVERNMENT SAVINGS CERTIFICATES ACT, 1959. (This form will be filled in by the holder/s and submitted with the certificate to the Postmaster of the office where the certificate stands registered).

To

The Postmaster,

.....

.....

Space for  
Postage Stamps

Under provisions of section 6(1) of the Government Savings Certificates Act, 1959, I/we.....the holder/s of Savings Certificates detailed on the reverse, hereby cancel the nomination previously made by me/us in respect of these certificates and registered in your office under No.....dated....

\*In place of the cancelled nomination, I/we hereby nominate the person/s mentioned below, who shall, on my/our death, become entitled to the Savings Certificate/s and to be paid the sum due thereon to the exclusion of all other persons

Sl. No.	Name of the nominee	Full Address	Date of birth of nominee in case of minor
_____	_____	_____	_____

\*To be filled up in case of variation only.

As the nominee/s at serial.....above is/are minor/s, I/we appoint Shri/Smt./Kumari .....(name and full address) as the person to recover the sum due thereon in the event of my/our death during the minority of the nominee/s. The Certificates are enclosed.

Address :— Yours faithfully,  
(In case of illiterate holder, father's name should be given)

Signature (or thumb impression if illiterate ) of holder/s.

Witnesses :—

Name  
Address (1)

Name  
Address (2)

N.B.—In the case of illiterate holders, the witnesses shall be persons whose signatures are known to the, Post Office.

Date stamp  
of  
Post Office

Order of the Postmaster accepting nomination.

Signature of Head/Sub-Postmaster

[F. No. 3/5/81-NS(t)]  
A.C. TIWARI, Jt. Secy.

सांकांमि 310(अ).—केन्द्रीय सरकार, सरकारी बचत-पत्र अधिनियम, 1959 (1959 का 46) की धारा 12 द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :—

1. संक्षिप्त नाम, प्रारूप और लागू होना :—(1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम राष्ट्रीय बचत-पत्र सातवां निर्गम) नियम, 1981 है।

- (2) ये पहली मई, 1981 को प्रवृत्त होंगे।
- (3) ये राष्ट्रीय बचत-पत्र (सातवां निर्गम) की लागू होंगे।

7. परिभाषाएं :—इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ में अन्यथा अपेक्षित न हो—

- (1) "अधिनियम" से सरकारी बचत-पत्र अधिनियम, 1959 (1959 का 46) अभिप्रेत है;
- (2) "पत्र" से राष्ट्रीय बचत-पत्र (सातवां निर्गम) अभिप्रेत है;
- (3) "सहकारी सोसाइटी" से, सरकारी सोसाइटी अधिनियम, 1912 (1912 का 2) के अधीन या उस समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन रजिस्ट्रीकृत या रजिस्ट्रीकृत समझी गई सोसाइटी अभिप्रेत है;
- (4) "निगम" से, उस समय प्रवृत्त किसी विधि द्वारा या उसके अधीन स्थापित निगम अभिप्रेत है;
- (5) "प्रारूप" से इन नियमों से संलग्न प्रारूप अभिप्रेत है;
- (6) "सरकारी कम्पनी" से कम्पनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 617 में यथापरिभाषित कम्पनी अभिप्रेत है;
- (7) "पहचान पर्ची" से ऐसी पहचान पर्ची अभिप्रेत है जो नियम 12 के अधीन किसी पत्र के धारक को दी गई है;
- (8) "स्थानीय प्राधिकरण" से, ऐसा नगर निगम, नगरपालिका समिति, जिला बोर्ड, पत्तन आयुक्त निकाय या अन्य प्राधिकरण अभिप्रेत है, जो नगरपालिका या स्थानीय विधि के नियंत्रण या प्रबंध के लिए अधिकार से हकदार है जिसे ऐसा नियंत्रण या प्रबंध सरकार द्वारा व्यस्त किया गया है।

(9) "पुराना पत्र" से ऐसा पत्र अभिप्रेत है जो डाकघर बचत-पत्र, नियम, 1960 या राष्ट्रीय बचत-पत्र (प्रथम निर्गम) नियम, 1965 या राष्ट्रीय बचत-पत्र (चतुर्थ निर्गम) नियम, 1970 या राष्ट्रीय बचत-पत्र (पंचम निर्गम) नियम, 1972 या राष्ट्रीय विकास बंकेपत्र नियम, 1977 के अधीन दिया गया है;

(10) "डाकघर" से भारत में ऐसा डाकघर अभिप्रेत है जो बचत बैंक का कार्य कर रहा है।

3. ये अभिधान जिनमें ये पत्र लिए जाएंगे:—राष्ट्रीय बचत-पत्र (सातवां निर्गम) 100 रु० 500 रु०, 1000 रु० और 5000 रु० के अभिधानों में जारी किए जाएंगे।

4. पत्रों के प्रकार और उनका जारी किया जाना:—(1) पत्र निम्नलिखित प्रकार के होंगे, अर्थात्:—

(क) एकल धारक प्रकार के पत्र;

(ख) संयुक्त "क" प्रकार के पत्र; और

(ग) संयुक्त "ख" प्रकार के पत्र।

(2) (क) एकल धारक प्रकार के पत्रों को किसी वयस्क को स्वयं उसकी ओर से या किसी अवयस्क की ओर से या किसी अवयस्क को जारी किया जाएगा,

(ख) संयुक्त "क" प्रकार के पत्रों को दो ऐसे वयस्कों को जारी किया जा सकेगा जो दोनों धारकों को संयुक्त रूप से या उत्तरजीवी को देय हों

(ग) संयुक्त "ख" प्रकार के पत्रों को दो ऐसे वयस्कों को संयुक्त रूप से जारी किया जा सकेगा जो धारकों में से किसी को या उत्तरजीवी को देय हो।

5. पत्रों का क्रय:—किसी भी रकम के पत्रों का क्रय किया जा सकेगा।

6. पत्रों के क्रय के लिए प्रक्रिया:—पत्र का क्रय करने का इच्छुक व्यक्ति या तो स्वयं या अपने संदेशवाहक या लघु बचत-योजना के किसी प्राधिकृत अधिकर्ता के माध्यम से प्ररूप 1 में (जो सभी डाकघरों में मुफ्त मिलता है) आवेदन पत्रों, मई, 1981 को या उसके पश्चात् किसी डाकघर में प्रस्तुत करेगा।

7. पत्रों का ग्रन्थ व्यक्तियों के निमित्त क्रय:—नीचे की सारणी के स्तम्भ 1 में विनिर्दिष्ट कोई व्यक्ति या निकाय उक्त सारणी के स्तम्भ 2 की तत्स्थानी प्रविष्टि में उसके नाम के साथने विनिर्दिष्ट व्यक्तियों के निमित्त पत्र क्रय कर सकेगा:

परन्तु ऐसा तभी होगा, जब उक्त स्तम्भ 2 में विनिर्दिष्ट व्यक्ति इन नियमों के अधीन पत्र क्रय करने के पात्र हैं।

#### सारणी

1	2
व्यक्ति या निकाय जो क्रय कर सकता है	के निमित्त
(1) कोई वयस्क	किसी अवयस्क के निमित्त
(2) कोई सहकारी सोसाइटी, जिसके प्रत्येक सहकारी बैंक या अनुसूचित बैंक भी है।	इसके ऐसे सदस्यों, ग्राहकों, कर्मचारियों या ठेकेदारों के निमित्त जिनका धन ऐसी सोसाइटी या बैंक के निक्षेप के रूप में या ग्रन्थ है।

(3) कोई राजपत्रित सरकारी अधिकारी, ऐसे व्यक्तियों के निमित्त, जिनका किसी सरकारी कम्पनी का या किसी केन ऐसे अधिकारी या रिजर्व निगम का या किसी स्थानीय प्राधि- बैंक में निक्षेप के रूप में या करण का कोई अधिकारी, या किसी ग्रन्थ है।

निमित्त निकाय जैसे किसी राज्य अधिनियम के अधीन स्थापित और राज्य सरकार द्वारा उसकी शासकीय हैसियत में इस निमित्त प्राधिकृत किसी विपणन समिति या भारतीय रिजर्व बैंक का कोई अधिकारी

8. विधिक निविदान: पत्र के क्रय के लिए संदाय निम्नलिखित रीतियों में से किसी में डाकघर में किया जा सकेगा, अर्थात्:—

(i) नकद

(ii) बैंक, अदायगी आवेदन या मांग देय ड्राफ्ट;

(iii) डाकघर बचत बैंक खाने में प्रत्याहरण के लिए पासबुक सहित प्रत्याहरण प्ररूप जो सम्यक् रूप में हस्ताक्षरित है।

(iv) उस पुराने परिचय पत्र का अभ्यर्पण जो निम्नलिखित रूप में सम्यक् रूप से उन्मोचित किया गया है,

"नये पत्र के जारी करने से संवाद प्राप्त हुआ—संलग्न आवेदन देखिए।"

9. पत्रों का जारी किया जाना:—(1) नियम 8 के अधीन संदाय करने पर उसके दिखाए, जहाँ ससाय बैंक, अदायगी आवेदन या मांगदेय ड्राफ्ट द्वारा किया जाता है प्रसामान्यतः पत्र तत्काल जारी किया जाएगा और ऐसे पत्र की तारीख उसके जारी करने की तारीख होगी।

(2) जहाँ पत्र क्रय करने के लिए संदाय किसी बैंक, अदायगी आवेदन या मांग देय ड्राफ्ट द्वारा किया जाता है जहाँ यथास्थिति, बैंक, अदायगी आवेदन या मांग देय ड्राफ्ट के प्रायमों के वसूल होने से पूर्व ऐसा पत्र जारी नहीं किया जाएगा और ऐसे पत्र की तारीख, यथास्थिति, बैंक, अदायगी आवेदन या मांग देय ड्राफ्ट के भुनाने की तारीख होगी।

(3) यदि किसी कारण से पत्र तत्काल जारी नहीं किया जा सकता है तो क्रेता को ऐसी अनन्तिम रसीद दी जाएगी जो बाद में पत्र में बदली जा सकेगी और ऐसे पत्र की तारीख वह होगी जो, यथास्थिति, उपनियम (1) या उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट है।

10. पुराने पत्र के आगमों के बदले में पत्र:—पुराने पत्र का ऐसा धारक जो उस पत्र के भुनाने का हकदार है, प्ररूप 1 में इन नियमों के अधीन पत्र के अनुदान के लिए आवेदन कर सकेगा; ऐसे आवेदन की प्राप्ति पर आवेदक को इन नियमों के अधीन पत्र जारी किया जाएगा और जारी करने की तारीख वह होगी, जिसको सम्यक्तः उन्मोचित पुराना पत्र प्रस्तुत किया जाता है।

11. अनियमित धृतियाँ:—(1) इन नियमों के उल्लंघन से क्रय या अर्जित किए गए, किसी पत्र को धारक द्वारा यथाशीघ्र भुनाया जाएगा जैसे ही इन नियमों के उल्लंघन से धृति के सत्य के बारे में पता चलता है और इन नियमों के उल्लंघन में किसी धृति पर कोई ध्याज नहीं दिया जाएगा।

(2) यदि किसी धृति पर जा इन नियमों के उल्लंघन में है, कोई ध्याज दिया गया है तो उसे तुरन्त सरकार को वापस कर दिया जाएगा। ऐसा न करने पर सरकार अन्तर्गत रकम को उस धन से भू-राजस्व की बकाया के रूप में वसूल करने की हकदार होगी जो सरकार द्वारा विनिधानकर्ता को देय है।

12. पहचान पर्ची:—(1) यदि किसी पत्र के एकल अवस्क धारक द्वारा जिसके अंतर्गत अवयस्क की ओर से धारक भी है या संयुक्त धारकों द्वारा उस डाकघर में जहाँ पत्र की रजिस्ट्री की गई है, किसी भी समय पहचान पर्ची जारी करने के लिए निवेदन किया जाता है, तो ऐसे धारक या धारकों को पहचान पर्ची, उसके या उनके द्वारा उस पर हस्ताक्षर करने के पश्चात्, जारी की जाएगी।

(2) पत्र के अन्तिम अन्वोधन के समय पहचान पर्ची अभ्यपित की जाएगी या उसके खो जाने पर ऐसे खो जाने के बारे में डाक-तार महा निवेशक द्वारा अधिकथित प्ररूप में डाकघर को घोषणा दी जाएगी।

13. एक डाक घर से दूसरे डाकघर को अन्तरण:—(1) कोई पत्र, किसी ऐसे डाकघर से, जहाँ वह रजिस्ट्रीकृत है, किसी अन्य डाकघर को डाक-तार महानिवेशक द्वारा अधिकथित प्ररूप में धारक या धारकों द्वारा दोनों डाकघरों में से किसी डाकघर में आवेदन करने पर अन्तरित किया जा सकेगा।

(2) प्रत्येक ऐसे आवेदन पर पत्र के धारक या धारकों द्वारा हस्ताक्षर किए जाएंगे; परन्तु संयुक्त 'क' प्रकार के पत्र या संयुक्त 'ख' प्रकार के पत्र की दशा में आवेदन पर संयुक्त धारकों में से किसी एक के द्वारा हस्ताक्षर किए जा सकेंगे, यदि दूसरा मर गया है।

14. पत्र का एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को अन्तरण:—(1) कोई पत्र डाकघर के किसी अधिकारी की लिखित पूर्ण सहमति से अन्तरित किया जा सकेगा जैसे कि नीचे विनिर्दिष्ट है। (जिसे इसमें इसके पश्चात् इन नियमों में प्राधिकृत डाकपाल कहा गया है।)

वे मामले जिनमें अन्तरण की मंजूरी दी जा सकती है	उस अधिकारी का पदनाम जो अन्तरण की अनुज्ञा देने के लिए सक्षम है।
--	--

(क) (i) मृतक धारक के नाम से उसके वारिस को ;

(ii) किसी धारक से न्यायालय को या न्यायालय के आदेश के अधीन किसी व्यक्ति को, प्रधान डाकपाल या उस डाकघर का उपडाकपाल जहाँ पत्र रजिस्ट्रीकृत है।

(iii) एकल धारक से दो संयुक्त धारकों के नाम जिन में अन्तरक एक व्यक्ति होगा,

(iv) संयुक्त धारकों में से किसी एक के नाम।

(ख) अन्य मामलों में प्रधान डाकपाल

(2) कोई प्राधिकृत डाकपाल पत्र के अन्तरण के बारे में अपनी सहमति तभी देगा जबकि निम्नलिखित बातों की पूर्ति हो जाती है, अर्थात्:—

(क) अन्तरिती इन नियमों के अधीन पत्रों का न्य करने का पात्र है ;

(ख) अन्तरण, पत्र की तारीख से कम से कम एक वर्ष की समाप्ति के पश्चात् किया जाता है या जहाँ अन्तरण की ऐसी अवधि की समाप्ति के पूर्व बांटा की जाती है वहाँ अन्तरण निम्नलिखित प्रवर्गों में से किसी में आता है, अर्थात्:—

(i) मैसिंग प्रेम और स्नेह के कारण किसी निकट संबंधी को अन्तरण ;

स्पष्टीकरण:—इस नियम के प्रयोजन के लिए "निकट संबंधी" से पति-पत्नी, पारम्परिक पूर्व-पुरुष या पति पारम्परिक वंशज, भाई या बहिन अभिप्रेत है।

(ii) मृतक धारक के वारिस के नाम अन्तरण;

(iii) किसी धारक से न्यायालय या न्यायालय के आदेशों के अधीन किसी अन्य व्यक्ति को अन्तरण;

[(iv) नियम 16 के अनुसार अन्तरण, और

(v) संयुक्त धारकों में से किसी एक की मृत्यु हो जाने की दशा में उसके उत्तरजीवी के नाम अन्तरण।

(ग) अन्तरण के लिए आवेदन, डाक तार महानिदेशक द्वारा अधिकथित प्ररूप में किया जाता है और उस पर पत्र के धारक या धारकों द्वारा हस्ताक्षर किए जाते हैं।

परन्तु संयुक्त 'क' प्रकार के पत्र या संयुक्त 'ख' प्रकार के पत्र की दशा में आवेदन पर धारकों में से किसी एक द्वारा हस्ताक्षर किया जा सकेगा यदि दूसरा मर गया है।

(3) नियम (2) के उपबन्धों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना कोई प्राधिकृत डाकपाल केवल किसी अवयस्क की ओर से धारण किए गए पत्र के अन्तरण के बारे में अपनी सहमति देगा, यदि प्रस्थापित अन्तरण के समय, यथास्थिति, अधिनियम की धारा 5 के खण्ड (ख) के उप खण्ड (i) या उपखण्ड (ii) में निर्दिष्ट माता या पिता या संरक्षक लिखित रूप में यह प्रमाणित करता है कि अवयस्क जीवित है और ऐसा अन्तरण उसके हित में है।

(4) अन्तरण की प्रत्येक दशा में जो कि नियम 16 के अधीन अन्तरण से भिन्न है मूल पत्र को सम्यक् रूप से अन्वोधित किया जाएगा और नए पत्र को जिस पर वही तारीख है जो अभ्यपित मूल पत्र की है, अन्तरिती के नाम जारी किया जाएगा।

15. एकल धारक से संयुक्त धारक को अन्तरण और विमर्षण:—नियम 14 के उप-नियम (1) के उपबन्धों के अधीन रहते हुए इन प्रभाव का आवेदन करने पर:—

(क) एकल धारक के नाम के पत्र को धारक और किसी अन्य व्यक्ति के नाम में संयुक्त रूप से अन्तरित किया जा सकेगा,

(ख) संयुक्त धारकों के नामों के पत्र को संयुक्त धारकों में से किसी के नाम में अन्तरित किया जा सकेगा।

16. पत्र का गिरवी रखा जाना:—(1) डाक तार महानिदेशक द्वारा अधिकथित प्ररूप में अन्तरण और अन्तरिती द्वारा आवेदन करने पर रजिस्ट्रीकरण के कार्यालय का डाकपाल किसी भी समय प्रतिभूति के रूप में ऐसे पत्र के अन्तरण की अनुज्ञा—

(क) भारत के राष्ट्रपति या राज्य के राज्यपाल को उसकी शासकीय हैसियत में देगा;

(ख) भारतीय रिजर्व बैंक या किसी अनुमोचित बैंक या महकारी सोसाइटी को जिसके अन्तर्गत सहकारी बैंक भी है, देगा;

(ग) किसी निगम या सरकारी कंपनी को देगा; और

(घ) किसी स्थानीय प्राधिकरण को देगा।

परन्तु किसी अवयस्क की ओर से क्य किए गए पत्र का अन्तरण इस उपनियम के अधीन तब तक नहीं होने दिया जाएगा जब तक कि अधिनियम की धारा 5 के यथास्थिति खण्ड (ख) के उपखण्ड (i) या उपखण्ड (ii) में निर्दिष्ट अवयस्क की माता या पिता या संरक्षक यह प्रमाणित नहीं करता है कि अवयस्क जीवित है और अन्तरण अवयस्क के फायदे के लिए है।

(2) जब उपनियम (1) के अधीन प्रतिभूति के रूप में किसी पत्र का अन्तरण किया जाता है तो रजिस्ट्रीकरण के कार्यालय का डाकपाल पत्र पर निम्नलिखित पृष्ठांकन करेगा, अर्थात् :—

“प्रतिभूति के रूप में.....को अंतरित।”

(3) इन नियमों में जैसा उपबंधित है उस के सिवाय, इस नियम के अधीन किसी पत्र के अंतरित के बारे में तब तक यह समझा जाएगा कि वह पत्र का धारक है जब तक कि उसका पुनः अन्तरण उपनियम (4) के अधीन नहीं हो जाता है।

(4) उपनियम (2) के अधीन अंतरित पत्र को गिरवीधार के लिखित प्राधिकार पर प्राधिकृत डाकपाल की लिखित रूप में पूर्व मजूरी से पुनः अंतरित किया जा सकेगा और जब ऐसा पुनः अन्तरण किया जाता है तब रजिस्ट्रीकरण के कार्यालय का डाकपाल पत्र पर निम्नलिखित पृष्ठांकन करेगा ; अर्थात् :—

“.....को पुनः अंतरित।”

टिप्पण : भारत सरकार का ऐसा राजपत्रित अधिकारी जो राष्ट्रपति या राज्य के राज्यपाल की ओर से उपनियम (1) के अधीन प्रतिभूति के रूप में पत्र स्वीकार करता है या उपनियम (4) के अधीन गिरवी का विमोचन करता है, यह प्रमाणित करेगा कि वह भारत के राष्ट्रपति/..... राज्य के राज्यपाल की ओर से लिखित विलेख निष्पादित करने के लिए संविधान के अनुच्छेद 299 के अधीन सम्यक् रूप से प्राधिकृत है।

टिप्पण 2 :—यथास्थिति भारतीय रिजर्व बैंक या किसी अनुसूचित बैंक किसी सहकारी सोसाइटी का, जिसमें कोई स्थानीय प्राधिकरण सम्मिलित है, ऐसा अधिकारी जो तत्संबंधी संस्थाओं की ओर से उपनियम के अधीन प्रतिभूति के रूप में पत्र स्वीकार करता है या नियम (4) के अधीन गिरवी का विमोचन करता है तारीख सहित अपने हस्ताक्षर और कार्यालय की मुद्रा के अधीन यह प्रमाणित करेगा कि वह उक्त संस्था के अनुच्छेदों के अधीन उसकी ओर से ऐसी लिखित या विलेख निष्पादित करने के लिए सम्यक् रूप से प्राधिकृत है।

(5) जहाँ किसी पत्र पर उपनियम (2) और (4) के अधीन किए गए अनेक पृष्ठांकन के परिणामस्वरूप उस पत्र पर उसी प्रकार का अतिरिक्त पृष्ठांकन करने के लिए, कोई स्थान शेष नहीं रहता है, वहाँ ऐसे पत्र के बचने में रजिस्ट्रीकरण के कार्यालय के डाकपाल द्वारा एक नया पत्र जारी किया जा सकेगा।

(6) उपनियम (5) के अधीन जारी किए गए किसी नए पत्र को इन नियमों के सभी प्रयोजनों के लिए उस पत्र के समतुल्य समझा जाएगा जिसके बचने में वह जारी किया गया है।

17. खो गए या नष्ट हो गए पत्र का प्रतिस्थापन—(1) यदि कोई पत्र खो जाता है, चोरी हो जाता है, नष्ट हो जाता है, विकृत हो जाता है या विरूपित हो जाता है तो उसका हकदार व्यक्ति उस डाकधर को जिसमें पत्र का रजिस्ट्रीकरण हुआ है या किसी अन्य डाकधर को, जिस वक्ता में आवेदन रजिस्ट्रीकरण के डाकधर को भेज दिया जाएगा, पत्र की दूसरी प्रति दिए जाने के लिए आवेदन कर सकेगा।

(2) ऐसे प्रत्येक आवेदन के साथ निम्नलिखित होंगे, अर्थात् :—

(क) विशिष्टीय वर्णित करने वाला विवरण, जैसे कि पत्र का संख्यांक, रकम और तारीख तथा वे परिस्थितियाँ जिनसे ऐसी हानि, चोरी, बिनाश, विकृति या विरूपण हुआ है

(ख) एक पहचान पर्चा, यदि कोई हो।

(3) यदि रजिस्ट्रीकरण के डाकधर के भारसाधक अधिकारी का पत्र खो जाना, चोरी, बिनाश, विकृति या विरूपण के बारे में समाधान हो जाता है, तो वह पत्र की दूसरी प्रति डाक तार महाविदेशक द्वारा अधि-कथित प्ररूप में तब जारी करेगा जब आवेदक एक या अधिक अनुमोदित प्रतिभूतियों या बैंक की गारण्टी सहित डाक तार महाविदेशक द्वारा अधिकथित प्ररूप में एवं क्षतिपूर्ति बन्धपत्र दे देता है :

परन्तु यह कि जहाँ खो गए, चोरी हुए, नष्ट हुए, विकृत हुए या विरूपित हुए पत्र या पत्रों का, अंकित या कुल अंकित मूल्य 500 रु० या उससे कम है वहाँ पत्र या पत्रों की दूसरी प्रति ऐसी प्रतिभूति या गारण्टी के बिना भी एक क्षतिपूर्ति बन्धपत्र देने पर आवेदक को जारी की जा सकेगी।

परन्तु यह और कि जब ऐसा आवेदन ऐसे पत्र के बारे में किया जाता है जो विकृत या विरूपित है, तो चाहे वह कितने ही अंकित मूल्य का है, पत्र की दूसरी प्रति ऐसे क्षतिपूर्ति बन्ध-पत्र प्रतिभूति या गारण्टी के बिना तब जारी की जा सकेगी, या विकृत या विरूपित पत्र और पहचान पर्ची यदि कोई हो, का अभ्यर्पण किया जाता है और पत्र की पहचान मूल रूप से जारी किए गए पत्र के रूप में की जा सकती है।

(4) उपनियम (3) के अधीन जारी की गई पत्र की दूसरी प्रति को इन नियमों के सभी प्रयोजनों के लिए मूल पत्र के समतुल्य माना जाएगा सिवाय इसके कि इसे उस डाकधर से, जिससे ऐसे पत्र का रजिस्ट्रीकरण हुआ है, अन्य किसी डाकधर में पूर्व स्थापन के बिना भुनाया नहीं जा सकेगा।

13. नामनिर्देशन :—(1) उपनियम (2) से (6) के उपबंधों के अधीन रहते हुए, पत्र के एकल धारक, या संयुक्त धारक पत्र का क्रय करने समय प्ररूप 1 में आवश्यक विशिष्ट भर कर ऐसे किसी व्यक्ति को नामनिर्दिष्ट कर सकेगा जो यथास्थिति, एकल धारक या दोनों संयुक्त धारकों की मृत्यु की वक्ता में पत्र और उस पर शोध्य रकम के संदाय का हकदार होगा। यदि पत्र का क्रय करने समय ऐसा कोई नामनिर्देशन नहीं किया जाता है तो यथास्थिति एकल धारक, संयुक्त धारक या उत्तर जीवी संयुक्त धारक पत्र क्रय करने के पश्चात् किसी भी समय, किन्तु उसके परिपक्व होने के पूर्व, उस डाकधर के, जिसने पत्र का रजिस्ट्रीकरण किया गया है, डाकपाल को प्ररूप 2 में एक आवेदन करके नामनिर्देशन कर सकेगा।

(2) एक से अधिक व्यक्तियों का नामनिर्देशन ऐसे मामलों में ही किया जाएगा जहाँ पत्र 500 रु० या अधिक अभिधान का है अथवा नहीं।

(3) ऐसे किसी पत्र के बारे में कोई नामनिर्देशन नहीं होगा जिसके बारे में किसी अवयस्क द्वारा या उसकी ओर से आवेदन किया गया है और जो उसके द्वारा या उसकी ओर से धारित है।

(4) इस नियम के अधीन पत्र के धारक या धारकों द्वारा किए गए नामनिर्देशन को उस डाकधर में, जिसमें वह रजिस्ट्रीकृत है, डाकपाल को पत्र सहित नियम 29 के उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट मूल्य के डाक टिकट लगाकर प्ररूप 3 में आवेदन करके रद्द या परिवर्तित किया जा सकेगा।

(5) विभिन्न तारीखों पर रजिस्ट्रीकृत पत्रों की बाबत नामनिर्देशन के लिए या किसी नामनिर्देशन के रद्दकरण या किसी नामनिर्देशन में परिवर्तन करने के लिए पृथक् आवेदन किए जाएंगे।

(6) नामनिर्देशन या किसी नामनिर्देशन का रद्दकरण या किसी नामनिर्देशन का परिवर्तन उस तारीख से प्रभावी होगा जिसको वह डाकधर में रजिस्ट्रीकृत होता है और वही तारीख पत्र पर लिखी जाएगी।

19. परिपक्व होने पर भुनाया जाना और ब्याज का संबंध—(1) किसी भी अभिधान के पत्र की परिपक्वता अवधि पत्र की तारीख से प्रारम्भ होने वाली छह वर्ष की अवधि होगी। पत्र को, उसकी परिपक्वता अवधि की समाप्ति के पश्चात् किसी भी समय सम-मूल्य पर भुनाया जा सकेगा।

(2) किसी भी अभिधान के पत्र पर ब्याज, पत्र की तारीख से प्रत्येक छह मास की समाप्ति पर संदेय होगा, किन्तु ऐसी परिपक्वता अवधि के, जिसके लिए पत्र धारित है, पश्चात् नहीं। ऐसे ब्याज की संगणना पत्र के अंकित मूल्य पर 12 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर पर की जाएगी।

टिप्पण : प्रत्येक छह मास की अवधि के लिए ब्याज का दावा उस अवधि की समाप्ति के पश्चात् किसी भी समय किया जा सकता है और जहाँ किसी कारण से ऐसा ब्याज शाब्द ही जाने पर भी, उसका दावा नहीं किया गया है वहाँ उस आधार पर किसी भी परिस्थिति के अधीन कोई अतिरिक्त ब्याज संदेय नहीं होगा।

20. समय-पूर्व भुनाया—(1) नियम 19 में किसी बात के होते हुए भी, किसी भी अभिधान का पत्र, धारक या धारकों के विकल्प पर पत्र की तारीख से ठीक तीन वर्ष की समाप्ति के पश्चात् किसी भी समय-कटौती करवा कर भुनाया जा सकेगा। ऐसी स्थिति में कटौती का समा योजन करने के पश्चात् संदेय रकम नीचे सारणी में विनिर्दिष्ट रूप में होगी।

#### सारणी

किसी पत्र के समय पूर्व भुनाए जाने पर कटौती के समायोजन के पश्चात् देय रकम पत्र की तारीख से उसके भुनाए जाने 100 रु० के अधि तक की अवधि धारण वाले पत्र पैर (रु० में)

3 वर्ष या अधिक किन्तु 3 वर्ष और 6 मास से कम	91.55
3 वर्ष और 6 मास या अधिक किन्तु 4 वर्ष से कम	89.90
4 वर्ष या अधिक किन्तु 4 वर्ष और 6 मास से कम	88.15
4 वर्ष और 6 मास या अधिक किन्तु 5 वर्ष से कम	86.35
5 वर्ष या अधिक किन्तु 5 वर्ष और 6 मास से कम	84.45
5 वर्ष और 6 मास या अधिक किन्तु 6 वर्ष से कम	82.45

टिप्पण :—किसी अन्य अभिधान के पत्र पर कटौती के समायोजन के पश्चात् संदेय रकम ऊपर सारणी में विनिर्दिष्ट रकम के अनुपात में होगी।

(2) उपनियम (1) और नियम 19 में किसी बात के होते हुए और उपनियम (3) के अधीन रहते हुए, किसी के पत्र की तारीख से तीन वर्ष की समाप्ति के पूर्व निम्नलिखित परिस्थितियों में से किसी में समय-पूर्व भुनाया जा सकेगा, अर्थात् :—

(क) धारक की या संयुक्त धारकों की दशा में दोनों धारकों की मृत्यु होने पर ;

(ख) जब गिरवी इन नियमों के अनुरूप है तब ऐसे गिरवीदार द्वारा समय-पहरण पर, जो राजपत्रित सरकारी अधिकारी है, और

(ग) व्यापार का आवेश होने पर।

(3) यदि कोई पत्र उपनियम (2) पत्र के अधीन भुनाया जाता है तो पत्र का अंकित मूल्य उसमें से नीचे विनिर्दिष्ट रूप में कटौती घटा दिए जाने के पश्चात् संदेय होगा :—

(i) यदि पत्र की तारीख से एक वर्ष की समाप्ति के पूर्व पत्र भुनाया जाता है। कटौती नियम 19 के उपनियम 2 के अधीन संदेय या संदेय ब्याज के समतुल्य होगी

(ii) यदि पत्र की तारीख से एक वर्ष की समाप्ति के पश्चात् किन्तु तीन वर्ष की समाप्ति के पूर्व पत्र भुनाया जाता है। कटौती (क) नियम 19 के उपनियम (2) के अधीन संदेय ब्याज और (ख) पत्र के अंकित मूल्य पर ऐसी दर से जो डाकघर बचत बैंक नियम, 1965 के अधीन एकल खाते को समय समय पर लागू हैं, उन पूर्ण मासों के लिए, जिसके लिए पत्र धारण किया गया है, संगणित साधारण ब्याज के अन्तर के समतुल्य होगी।

21. भुनाए जाने का स्थान—कोई पत्र उस डाकघर से, जहाँ वह रजिस्ट्री. कृत हुआ है, भुनाया जा सकेगा।

परन्तु पत्र को किसी अन्य डाकघर से यदि उस डाकघर के भारमाधिक अधिकारी का उस रजिस्ट्रीकरण के डाकघर से पहचान पत्रों या यह मत्यापन करने पर कि भुनाने के लिए पत्र प्रस्तुत करने वाला व्यक्ति उसके भुनाने का हकदार है, समाधान हो जाता है, भुनाया जा सकेगा।

22. वर्षों का उन्मोचन :—(1) किसी पत्र के अधीन देय रकम को प्राप्त करने का हकदार व्यक्ति, इसके भुनाए जाने तब, उसके पोछे संदाय प्राप्त करने के प्रमाण के रूप में हस्ताक्षर करेगा।

(2) किसी ऐसे अवयस्क की ओर से क्रय किए गए पत्र की दशा में जिसने अब अवयस्कता प्राप्त कर ली है, पत्र को उस व्यक्ति द्वारा स्वयं हस्ताक्षरित किया जाएगा किन्तु उसके हस्ताक्षर या तो उस व्यक्ति द्वारा जिसने इसे उमठा और ने क्रय किया है या, किसी अन्य व्यक्ति द्वारा जिसे डाकघर जानता है, अनुप्रमाणित किए जाएंगे।

(3) नियम 29 के उपनियम (1) में विनिर्दिष्ट फीस के संदाय किए जाने पर पत्र भुनाने वाले किसी व्यक्ति को डाकघर द्वारा उन्मोचन का प्रमाणपत्र दिया जा सकेगा।

23. अवयस्क के पत्र का भुनाया जाना :—अवयस्क की ओर से पत्र को भुनाने वाला व्यक्ति अधिनियम की धारा 5 के खण्ड (ख) के यथास्थिति, उपखण्ड (i) या उपखण्ड (ii) में विनिर्दिष्ट अवयस्क के माता-पिता या संरक्षक इस प्रभाव का, एक प्रमाणपत्र देगा कि अवयस्क जीवित है और धन की अवयस्क की ओर से अपेक्षा है।

(2) जब नामनिर्देशित अवयस्क है तो अधिनियम की धारा 6 की उपधारा (3) के अधीन नियुक्त व्यक्ति पत्र को भुनाने समय एक प्रमाण-पत्र देगा कि अवयस्क जीवित है और धन की अवयस्क की ओर से अपेक्षा है।

24. वारिसों को नदाय :—(i) अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (4) के प्रयोजन के लिए नीचे नामित प्राधिकारी पत्र के धारक की मृत्यु पर प्रत्येक के सामने दी गई सीमा तक उसकी विल के प्रोबेट या उसकी संपत्ति के प्रशासन पत्र या भारतीय उन्नाधिकार अधिनियम, 1925

(1950 का 39) के अधीन वि० ग० उत्तराधिकार प्रमाणपत्र के प्रस्तुत किए बिना दावे को मंजूर करने के लिए मंजूर होंगे :—

प्राधिकारी का नाम	सीमा
	रुप०
(i) कानून-वेतन-मान विभागीय उप-डाकपाल	100
(ii) निम्न चयन श्रेणी में उप-डाकपाल	250
(iii) (क) अराजपत्रित प्रधान डाकपाल और उप-डाकपाल जो उच्चतर श्रेणी में है	
(ख) उच्चतर चयन श्रेणी में उप-डाकपाल और उच्चतर चयन श्रेणी में सहायक प्रेसिडेंसी डाकपाल	300
(iv) समूह 'ख' में उप-डाकपाल और उप-प्रेसिडेंसी डाकपाल	2000
(v) (क) समूह 'क' या समूह 'ख' डाकपाल/प्रेसिडेंसी डाकपाल और डाकघरों के अधीक्षक/डाकघरों के ज्येष्ठ अधीक्षक	5000
(ख) डाक मकिलों के प्रधान (सहायक निवेशक/सहायक महाडाकपाल)	5000

25. सेना, वायु सेना और नौसेना के कर्मियों द्वारा धारित पत्रों का भुनाया जाना :—जहाँ पत्र ऐसे व्यक्ति द्वारा धारित है, जो सेना अधिनियम, 1950 (1950 का 46), या वायु सेना अधिनियम, 1950 (1950 का 45), या नौसेना अधिनियम, 1957 (1957 का 62) के अधीन है और ऐसे व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है या वह अभिलेखन करता है, बहा उम कोर, विभाग, टुकड़ी यूनिट या पोत, जिसका मृत व्यक्ति या अभिलेखक था, का यथास्थिति, कमान ऑफिसर या समायोजन समिति उस डाकघर के भारसाधक अधिकारी को, जहाँ पत्र रजिस्ट्रीकृत हुआ है, पत्र के अधीन देय रकम उसे संवाय करने के लिए एक अध्यापिका भेज सकेगी; और डाकघर का भारसाधक अधिकारी ऐसी अध्यापिका का अनुपालन करने के लिए तब भी बाध्य होगा, चाहे पत्र के धारक की मृत्यु या अभिलेखन के समय किसी व्यक्ति के हक में किया या कोई नाम निर्देशन प्रवृत्त है।

स्पष्टीकरण : उपर्युक्त अध्यापिका सेना या वायु सेना के व्यक्ति की दशा में सेना और वायु सेना (प्राइवेट सम्पत्ति का व्ययन) अधिनियम, 1950 (1950 का 40) धारा 3 या 4 के अधीन नौसेना के व्यक्ति की दशा में नौसेना अधिनियम 1957 (1957 का 62) की धारा 171 या धारा 171 के अधीन की जाएगी।

26. नाम निर्देशितियों के अधिकार—(1) पत्र के धारक की मृत्यु की दशा में, जिसकी बाबत नाम निर्देशन प्रवृत्त है, नाम निर्देशित, पत्र की परिपक्वता से पूर्व या पश्चात् किसी भी समय :

(क) पत्र को भुनाने या

(ख) पत्र को समुचित अभिधानों में, व्यक्तिगत नाम निर्देशितियों या संयुक्त रूप से दो व्यक्त नाम निर्देशितियों के पक्ष में उप-विभाजित करने,

का हकदार होगा या होंगे।

(2) उपनियम (1) के प्रयोजन के लिए, उत्तरजीवी नामनिर्देशित रजिस्ट्रीकरण के कार्यालय के डाकपाल को धारक की मृत्यु और मृत नाम निर्देशित या मान निर्देशितियों यदि कोई है, के बारे में मृत के साथ, एक आवेदन देगा/देंगे।

(3) यदि एक से अधिक नामनिर्देशित है तो अब नामनिर्देशित सदाय प्राप्त करने समय या उप-विभाजन के समय पत्र का संयुक्त उन्मोचन करेंगे।

टिप्पण—जहाँ नामनिर्देशन किसी एकल नामनिर्देशित या दो व्यक्त नाम निर्देशितियों के पक्ष में है वहाँ रजिस्ट्रीकरण का डाकघर उस निमित्त आवेदन वि० जाने पर यथास्थिति ऐसे नामनिर्देशित या संयुक्त रूप से नामनिर्देशितियों के नाम में नया पत्र जारी कर सकेगा।

27. एक अभिधान से दूसरे में संपरिवर्तन—(1) कम अभिधानों के पत्र उसी सकल अंकित मूल्य के उनसे अधिक अभिधान के पत्र या पत्रों में बदले जा सकेंगे या अधिक अभिधान का पत्र उसी सकल अंकित मूल्य के उनसे कम अभिधान के पत्रों में बदला जा सकेगा।

परन्तु भिन्न तारीखों वाले पत्रों को उच्चतर अभिधान के पत्र या पत्रों में बदलने के लिए मिलाया नहीं जाएगा।

(2) बदले गए पत्र या पत्रों के जारी किए जाने की तारीख वही होगी जो अभ्यर्पित किए गए मूल पत्र या पत्रों की है, न कि वह तारीख जिसको पत्र बदला गया है।

28. आय-कर—नियम 19 के उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट पत्रों पर ब्याज पर कर आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन देय होगा किन्तु ब्याज के संदाय के समय कर की कोई कटौती नहीं की जाएगी।

29. फीस :—(1) निम्नलिखित संव्यवहारों के बारे में 500 रु० या उससे अधिक के अभिधान के पत्र का; दशा में एक रुप० की फीस और किसी अन्य मामले में 25 पैसे की फीस प्रभावी होंगी, अर्थात्

- (1) पत्र का एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को अन्तरण जो धारक से न्यायालय को या न्यायालय के आदेश के अधीन अन्तरण से भिन्न है;
- (2) नियम 17 के अधीन पत्र की दूसरी प्रति का जारी किया जाना;
- (3) नियम 22 के अधीन उन्मोचन पत्र का जारी किया जाना;
- (4) नियम 27 के अधीन एक अभिधान में दूसरे अभिधान में संपरिवर्तन।

स्पष्टीकरण—(1) खण्ड (iii) के अधीन उन्मोचन प्रमाणपत्र जारी करने के लिए प्रधारित की जाने वाली फीस की गणना, ऐसे सभी पत्रों के सकल अंकित मूल्य पर पृथक-पृथक की जाएगी, जो किसी एक आवेदन पर श्रय किए गए थे और जो उन्मोचन प्रमाणपत्र में सम्मिलित किए गए हैं।

स्पष्टीकरण—(2) खण्ड (ii) के अधीन संपरिवर्तन के लिए प्रधारित की जाने वाली फीस ऐसे संपरिवर्तन पर जारी किए जाने के लिए अपेक्षित पत्रों की संख्या और अभिधान पर आधारित होगी।

(2) नाम निर्देशन के रजिस्ट्रीकरण या नामनिर्देशन में परिवर्तन या उसके रद्दकरण के लिए प्रत्येक आवेदन पर पचास पैसे की फीस प्रभावी होगी।

परन्तु प्रथम नाम निर्देशन के रजिस्ट्रीकरण के किसी आवेदन पर कोई फीस प्रभावी नहीं होगी।

30. डाकघर का उत्तरदायित्व :—किसी व्यक्ति द्वारा पत्र का कब्जा अथवा प्राप्त करने और इसे कपटपूर्वक भुनाने ने धारक को हुई हानि के लिए डाकघर उत्तरदायी नहीं होगा।

31. भूल की परिशुद्धि :—डाकघर महानिदेशक, या महाडाकपाल या डाक प्रभागों के प्रधान अपनी-अपनी अधिकारिता में, या तो स्वप्रेरणा से या इन नियमों के अनुसरण में जारी किए गए पत्र में हिनक किसी व्यक्ति द्वारा वि० ग० आवेदन पर, उस पत्र को वापस किसी लेखन या गणित सम्बन्धी भूल को परिधि कर सकेंगे, किन्तु यह तब जब इससे सरकार या ऐसे व्यक्ति को कोई वितीय हानि नहीं होती।

32. शिथिल करने की शक्ति :—जहां केन्द्रीय सरकार का समाधान हो जाता है कि इन नियमों के किसी उपबन्ध के प्रवर्तन से, पत्र के धारक या भारको को अनुचित कष्ट होता है, वहाँ वह कारणों को लेखबद्ध करके आदेश द्वारा उक्त उपबन्ध की अपेक्षाओं को, ऐसी रीति में, जो अधिनियम के उपबन्धों के असंगत न हो, शिथिल कर सकेगी।

प्रारम्भ ।

[नियम 6, 10 और 18(1) देखिए]

भारतीय डाक मार विभाग

राष्ट्रीय बचत पत्र (सातवां निर्गम) के क्रय के लिए आवेदन का प्रारम्भ क्रम सं० . . . . .

(1) मैं/हम राष्ट्रीय बचत पत्रों (सातवां निर्गम) के क्रय के लिए जिनका ब्यौरा नीचे के विवरण में दिया है, आवेदन करना हूँ/करते हैं और विवरण के स्तम्भ 1 में दशित रकम निविदा करना हूँ/करते हैं :—

निविदा का प्रारूप	रकम	उन पत्रों अपेक्षित का अभि- पत्रों की संयुक्त धान जिनके संख्या लिए आवेदन किया गया है।	*अपेक्षित पत्रों की संयुक्त प्रारूप ('क' या 'ख' प्रकार) रु०	कुल अंकित मूल्य
1	2	3	4	5
1. नकदी				
2. बैंक पर लिखा गया चेक, मांगद्वय ड्राफ्ट या किसी अनुमोदित स्थायी बैंक का अवायवी आवेदन, या संवाय पर्ची का संख्यांक . . . . . तारीख . . . . .	100 500 1000			
3. डाक घर बचत बैंक से प्रत्याहरण के लिए आवेदन।	5000			
4. पुनः विनिधान के लिए परिपक्व पत्र				
कुल अंकित मूल्य				

\*केवल संयुक्त धृति की दशा में भरा जाएगा।

(क) \*\* मेरे/हमारे नाम/नामों (मोटे अक्षरों में) उपनामों सहित, यदि कोई हों, मे

\*\*एकल या संयुक्त धारकों के लिए

(ख) \*अवयस्क की ओर से (मोटे अक्षरों में) . . . . .

\*अवयस्क की ओर से क्रय के लिए

अवयस्क के जन्म की तारीख

और अवयस्क के . . . . .

(1) पिता, (2) माता, (3) माता या पिता में से कोई एक,

(4) विधिक संरक्षक

द्वारा भुजाए जा सकेंगे।

\*\* (अनापेक्षित अनुकूल्यों को या सभी भदों को यदि प्राधिकरण करने का वाछा नहीं है, की काट दीजिए)

(क या ख में से जो अपेक्षित नहीं है उसे काट दीजिए)

\* (ग) . . . . . सोसाइटी या कम्पनी, आदि) के माध्यम से . . . . . (सदस्य, आदि) के नाम में।

\* किसी सहकारी सोसाइटी, सहकारी बैंक या अनुमोदित बैंक के लिए—इसके ऐसे सदस्यों, ग्राहकों, कर्मचारियों या ठेकेदारों के निमित्त जिनका धन ऐसे सोसाइटी या बैंक में निक्षेप के रूप में या अन्यथा है; किसी राजपत्रित सरकारी अधिकारी, किसी सरकारी कम्पनी या किसी निगम या किसी स्थायी प्राधिकरण का कोई अधिकारी या किसी निगमित निकाय जैसे किसी राज्य अधिनियम के अधीन स्थापित और राज्य सरकार द्वारा उसके शासकीय हैसियत में इन निमित्त प्राधिकृत किसी विपणन समिति या भारतीय रिजर्व बैंक के किसी अधिकारी के लिए।

(2) मैं/हम राष्ट्रीय बचतपत्र (सातवां निर्गम) नियम, 1981 का पालन करने के लिए कटार करना हूँ/करते हैं।

(3) \*\*\* मुझे/हमें पहचान पर्ची की अपेक्षा है/नहीं है।

(किसी प्राधिकृत अधिकारी या संदेश वाहक की साफत किसी विनिधान की दशा में नमूना हस्ताक्षर और पहचान चिन्ह, पैरा (5) के नीचे दिए जाने चाहिए।

\*\*\* जो लागू नहीं है उसे काट दीजिए।

टिप्पण :—अवयस्क की ओर से किए गए क्रय की दशा में किसी प्राधिकृत व्यक्ति से भिन्न किसी व्यक्ति को, कोई पहचान पर्ची जारी नहीं की जाएगी।

उपरोक्त पैरा (1) (ख) देखिए।

उपरोक्त पैरा 1 (ख) के अनुसार विनिधानकर्ता के हस्ताक्षर (या अंगूठे प्राधिकृत व्यक्ति/व्यक्तियों के हस्ताक्षर का निशान यदि निरक्षर हो) (अंगूठे का निशान नहीं) यदि कोई हो।

तारीख . . . . . तारीख . . . . .

पता . . . . . पता . . . . .

टिप्पण : निरक्षर आवेदक की दशा में उसके पिता का नाम दिया जाए।

(4) पत्र और पहचान पर्ची मेरे/हमारे अधिकारी श्री/श्रीमती . . . . . की जिसके बारे में प्राधिकार संख्या . . . . . या संदेश वाहक को जो यह आवेदन पेश करना है, दे दिया जाए।

(जो शब्द लागू नहीं होते उन्हें काट दीजिए)

\* विनिधानकर्ता पत्रों का वैयक्तिक रूप में परिधान नहीं लेता है तो उस दशा में ही हस्ताक्षरित किया जाएगा यः अंगूठे का निशान लगाया जाएगा।

विनिधानकर्ता (विनिधानकर्ताओं के) हस्ताक्षर (या अंगूठे का निशान यदि निरक्षर हो)

(5) पत्र जिनका व्योरा ऊपर दिया गया है\* और पहचान पर्ची प्राप्त की।

\*यदि पहचान पर्ची जारी नहीं की जाती है तो उसे काट दी जाए।

.....  
 केता या उसके अभिकर्ता/संदेश वाहक के हस्ताक्षर या अंगूठे का निशान (प्राधिकृत अभिकर्ता की दशा में उसकी प्राधिकार संख्या दी जानी चाहिए)

पहचान के निशान।

नमूना हस्ताक्षर

(6) सरकारी बचत-पत्र अधिनियम, 1959 की धारा 6(1) के उपबन्धों के अधीन मैं/हम ..... बचत पत्र (पत्रों), जो इस आदेश में उल्लिखित हैं, का धारक इसके द्वारा सीधे बणित व्यक्ति (व्यक्तियों) के नाम निर्देशित करता हूँ/करते हैं जो मेरी हमारी मृत्यु पर अन्य सभी व्यक्ति (यों) को अपवर्जित करने हुए बचत पत्र (पत्रों) के और उस पर देय रकम के हकदार हो जाएंगे।

क्रम सं०	नामनिर्देशिती का नाम	पूरा पता	अवयस्क की दशा में नाम-निर्देशिती के जन्म की तारीख
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			

उपरोक्त क्रम संख्यांक (संख्यांक) ..... पर नामनिर्देशिती अवयस्क है/हैं, मैं/हम श्री, श्रीमती, कुमारी ..... (नाम और पूरा पता) को, नामनिर्देशिती (नामनिर्देशितियों) की अवयस्कता के दौरान मेरी/हमारी मृत्यु हो जाने की दशा में देय राशि प्राप्त करने वाले व्यक्ति के रूप में नियुक्त करता हूँ।

साक्षी के हस्ताक्षर और पूरा पता धारक के हस्ताक्षर (या अंगूठे का निशान यदि निरक्षर हो)

डाकघर द्वारा पूरा किया जाएगा

जारी किए गए पत्रों का क्रम संख्यांक	निर्गमन मूल्य रु०	व्याज के संवाध की तारीख	शुनाए जाने की तारीख और डाकपाल के अध्याक्षर	टिप्पणियाँ जैसे कि अस्तरण, प्रति आदि जारी करना और डाकपाल के अध्याक्षर
1	2	3	4	5
1.				
2.				
3.				

राष्ट्रीय बचत पत्र (सातवाँ निर्गम) की कुल संख्या .....  
 तारीख .....

डाकपाल के हस्ताक्षर

प्रारूप 2

(नियम 18(1) देखिए)

भारतीय डाकघर विभाग

क्रम सं०.....

सरकारी बचत पत्र अधिनियम, 1959 की धारा 6 के अधीन नाम निर्देशन के लिए आदेश का प्रारूप।

(यह प्रारूप धारक/धारकों द्वारा भरा जाएगा और उस कार्यालय के डाकपाल को, जहाँ पत्र रजिस्ट्रीकृत हुए हैं, पत्रों सहित दिया जाएगा)

सेवा में

डाकपाल,

सरकारी बचत पत्र अधिनियम, 1959 की धारा 6(1) के उपबन्धों के अधीन मैं/हम ..... जो बचत पत्र/पत्रों, जिनका व्योरा आगे दिया गया है, का धारक हूँ/हैं इसके द्वारा निम्न बणित व्यक्ति/व्यक्तियों को, जो मेरी/हमारी मृत्यु पर बचत पत्र/पत्रों और उन पर देय राशि जो संदाय होनी है, का/के अन्य सभी व्यक्तियों को अपवर्जित करते हुए हकदार होगा/होंगे, नामनिर्देशित करता हूँ/करते हैं। मैं/हम इसके द्वारा घोषित करता हूँ/करते हैं कि मैंने/हमने इन पत्रों की बाबत अब तक कोई नामनिर्देशन नहीं किया है। पत्र संलग्न हैं।

क्रम सं०	नामनिर्देशिती का नाम	पूरा पता	अवयस्क की दशा में नामनिर्देशिती के लघव की तारीख
----------	----------------------	----------	---

उपरोक्त क्रम सं०..... पर नामनिर्देशिती अवयस्क है/हैं मैं/हम श्री/श्रीमती/कुमारी ..... (नाम और पूरा पता) को, नामनिर्देशिती। नामनिर्देशितियों की अवयस्कता के दौरान मेरी/हमारी मृत्यु हो जाने की दशा में उस पर देय राशि को वसूल करने वाले व्यक्ति के रूप में नियुक्त करता हूँ/करते हैं।

पत्रों का क्रम संख्यांक	अभिधान	जारी करने की तारीख	जारी करने वाला कार्यालय
1	2	3	4

पता

भवदीय,

(निरक्षर धारक की दशा में पिता का नाम दिया जाना चाहिए)

साक्षी

धारक/धारकों के हस्ताक्षर (अंगूठे का निशान यदि निरक्षर हो/हों)

नाम

(1)

पता

नाम

(2)

पता

ध्यान दीजिए..... निरक्षर धारक की दशा में साक्षी वे व्यक्ति होंगे जिनके हस्ताक्षर डाकघर में हैं।

नामनिर्देशक को स्वीकार करने वाले डाकपाल का आदेश

डाकघर की तारीख/स्टाम्प

प्रधान/उप डाकपाल के हस्ताक्षर

## प्रारूप 3

(नियम 18(4) देखिए)

## भारतीय डाक तार विभाग

क्रम संख्या .....

सरकारी बचत पत्र अधिनियम, 1959 की धारा 6 के अधीन बचत पत्रों की बाबत पूर्वतन किए गए, नामनिर्देशन के रद्दकरण या उनमें परिवर्तन के लिए आवेदन का प्रारूप ।

(यह प्रारूप धारक/धारकों द्वारा भरा जाएगा और उस कार्यालय के डाकपाल को जहाँ पत्र रजिस्ट्रीकृत हुमा है पत्र सहित दिया जाएगा)

सेवा में

डाकपाल

डाक टिकटों के लिए जगह

सरकारी बचत पत्र अधिनियम, 1959 की धारा 6(1) के उपबन्धों के अधीन मैं/हम ..... जो बचत पत्र जिनका ध्यौरा धारण किया गया है, का धारक हूँ/हैं, इसके द्वारा इन पत्रों, धारक के कार्यालय में संख्याक ..... तारीख ..... के अधीन रजिस्ट्रीकृत है, की बाबत अपने द्वारा किए गए पूर्वतन नामनिर्देशन को रद्द करना हूँ/करते हैं ।

\*रद्द किए गए नाम निर्देशन के स्थान पर मैं/हम निम्नवर्णित व्यक्ति / व्यक्तियों को नामनिर्दिष्ट करता हूँ/करते हैं जो मेरी/हमारी मृत्यु पर अन्य सभी व्यक्तियों को प्रपञ्चित करने हुए पत्र/पत्रों और उन पर वेय राशि को संवाय होनी है का/के हकदार होगा/होगें ।

क्रम सं०	नाम निर्देशित/नाम निर्देशितियों का/के नाम	पूरा पता	अवयस्क की वंशा में नाम निर्देशित की जन्म की तारीख
----------	---	----------	---

केवल परिवर्तन करने की वंशा में भरा जाएगा ।

उपरोक्त क्रम संख्या ..... पर नामनिर्देशित अवयस्क हूँ/हैं, मैं/हम श्रीमती/कुमारी ..... (नाम और पूरा पता) को नाम निर्देशित/नाम निर्देशितियों की अवयस्कता के दौरान मेरी/हमारी मृत्यु हो जाने की वंशा में, उस पर वेय राशि को वसूल करने वाले व्यक्ति के रूप में नियुक्त करता हूँ/करते हैं ।

पत्र संलग्न है ।

पत्रों का क्रम संख्याक अधिधान	जारी करने की तारीख	जारी करने वाला कार्यालय
-------------------------------	--------------------	-------------------------

पता :

(निरक्षर धारक की वंशा में)

मध्यय,

पिता का नाम दिया जाना चाहिए)

धारक के हस्ताक्षर

(यदि निरक्षर हो तो प्रंगूटे का निशान)

साक्षी :

नाम	(1)
पता :	

नाम	(2)
पता :	

ध्यान दीजिए—निरक्षर धारकों की वंशा में साक्षी के व्यक्ति होंगे जिनके हस्ताक्षर हस्ताक्षर डाकघर में हैं ।

नामनिर्देशन की स्वीकार करने वाले डाकपाल का आदेश

डाकघर की तारीख सहित स्टाम्प

प्रधान उप डाकपाल के हस्ताक्षर

[फ० सं० 3/5/81, एन० एम० (ii)]

ए० सी० निशारी, संयुक्त मन्त्रि

## MINISTRY OF FINANCE

(Department of Economic Affairs)

## NOTIFICATION

New Delhi, the 24th April, 1981

G.S.R. 310(E).—In exercise of the powers conferred by section 12 of the Government Savings Certificates Act, 1959 (46 of 1959), the Central Government hereby makes the following rules, namely :—

1. Short title commencement and application—(1) These rules may be called the National Savings Certificates (VII Issue) Rules, 1981.

(2) They shall come into force on the 1st day of May, 1981.

(3) They shall apply to the National Savings Certificates (VII Issue).

2. Definitions.—In these rules, unless the context otherwise requires—

(i) "Act" means the Government Savings Certificates Act, 1959 (46 of 1959);

(ii) "Certificate" means the National Savings Certificate (VII Issue);

(iii) "Co-operative Society" means a society registered or deemed to have been registered under the Co-operative Societies Act, 1912 (2 of 1912) or under any other law for the time being in force;

(iv) "Corporation" means a corporation established by or under any law for the time being in force, but does not include a company;

(v) "Form" means a form appended to these rules;

(vi) "Government Company" means a company as defined in section 617 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956);

(vii) "Identity Slip" means an identity slip issued to a holder of a certificate under rule 12;

(viii) "Local Authority" means a municipal corporation, municipal committee, district board, body of port commissioners or other authority legally entitled to or entrusted by the Government with the control or management of a municipal or local fund;

(ix) "Old Certificate" means a certificate issued under the Post Office Savings Certificates Rules, 1960, or the National Savings Certificates (First Issue) Rules, 1965, or the National Savings Certificates (IV Issue) Rules, 1970, or the National Savings Certificates (V Issue) Rules, 1973, or a Bond issued under the National Development Bonds Rules, 1977;

(x) "Post Office" means any post office in India doing Savings Bank work.

3. Denominations in which certificates shall be issued.—The National Savings Certificates (VII Issue) shall be issued in denominations of Rs. 100, Rs. 500, Rs. 1000 and Rs. 5000

4. Types of Certificates and Issue thereof.—(1) The Certificates shall be of the following types, namely :

(a) Single Holder Type Certificates;

(b) Joint 'A' Type Certificates; and

(c) Joint 'B' Type Certificates.

(2) (a) Single Holder Type Certificates may be issued to an adult for himself or on behalf of a minor or to a minor.

(b) Joint 'A' Type Certificates may be issued to two adults payable to both holders jointly or to the survivor.

(c) Joint 'B' Type Certificates may be issued jointly to two adults payable to either of the holders or the survivor.

5. Purchase of Certificates.—Certificates may be purchased for any amount.

6. Procedure for purchase of certificates.—Any person desiring to purchase a certificate shall present at a post office on or after the 1st day of May, 1981 an application in Form 1 (obtainable free of cost at all post offices) either in person or through his messenger or through an authorised agent of the Small Savings Schemes.

7. Purchase of Certificates on behalf of others.—A person or body specified in column I of the Table below may purchase certificate(s) on behalf of persons specified against his or its name in the corresponding entry in column II of the said Table.

Provided that the persons specified in the said column II are eligible under these rules to purchase certificates.

TABLE

I	II
Person or body who can purchase	on behalf of
(i) an adult	a minor
(ii) a co-operative society including a co-operative bank, or a scheduled bank.	its members, clients, employees or contractors whose moneys are held as deposit or otherwise with such society or bank.
(iii) a Gazetted Government Officer, an officer of a Government company or of a corporation or of a local authority, or an officer of a corporate body like a marketing committee established under a State Act and authorised by the State Government in this behalf, in his official capacity, or the Reserve Bank of India.	Persons whose moneys are held as deposit or otherwise with such officer or the Reserve Bank.

8. Legal Tender.—Payment for the purchase of a certificate may be made to a post office in any of the following modes, namely :—

- cash ;
- a cheque, pay order or demand draft ;
- duly signed withdrawal form together with the pass book for withdrawal from the post office savings bank account ;
- Surrender of a matured old certificate duly discharged as follows "Received payment through issue of fresh certificate vide application attached".

9. Issue of certificates.—(1) On payment being made under rule 8 except where payment is made by a cheque, pay order or demand draft, a certificate shall normally be issued immediately, and the date of such certificate shall be the date of payment.

(2) Where payment for the purchase of a certificate is made by a cheque, pay order or demand draft, the certificate shall not be issued before the proceeds of the cheque, pay order or demand draft, as the case may be, are realised

and the date of such certificate shall be the date of encashment of the cheque, pay order or demand draft, as the case may be.

(3) If for any reason a certificate cannot be issued immediately, a provisional receipt shall be given to the purchaser which may later be exchanged for a certificate and the date of such certificate shall be as specified in sub-rule (1) or sub-rule (2), as the case may be.

10. Certificate in lieu of proceeds of old certificate.—A holder of an old certificate entitled to encash that certificate may make an application in Form I for the grant of a certificate under these rules; on receipt of such application, there shall be issued to the applicant a certificate under these rules, the date of issue being the date on which the old certificate duly discharged is presented.

11. Irregular holding.—(1) Any certificate purchased or acquired in contravention of these rules shall be encashed by the holder as soon as the fact of the holding being in contravention of these rules is discovered and no interest shall be paid on any holding in contravention of these rules.

(2) If any interest has been paid on any holding which is in contravention of these rules, it shall be forthwith refunded to the Government failing which the Government shall be entitled to recover the amount involved from any money payable by the Government to the investor or as on arrear of land revenue.

12. Identity Slip.—(1) If a request for the issue of an identity slip is made at any time by an individual adult holder of a certificate including a holder on behalf of a minor or by joint holders to the post office where the certificate stands registered, an identity slip shall be issued to such holder or holders on his or their signing the identity slip.

(2) The identity slip shall be surrendered at the time of the final discharge of the certificate or in case of its loss, a declaration of such loss shall be furnished to the post office in the form laid down by the Director General, Posts and Telegraphs.

13. Transfer from one post office to another.—(1) A certificate may be transferred from a post office at which it stands registered, to any other post office on the holder or holders making an application in the form laid down by the Director General, Posts and Telegraphs, at either of the two post offices.

(2) Every such application shall be signed by the holder or holders of the certificate ;

Provided that in the case of a Joint 'A' Type Certificate or a Joint 'B' Type Certificate, the application may be signed by one of the joint holders if the other is dead.

14. Transfer of certificate from one person to another.—(1) A certificate may be transferred with the previous consent in writing of an officer of the post office as specified below (hereinafter referred to in these rules as authorised Postmaster).

Cases in which transfer can be sanctioned	Designation of the officer competent to grant permission for transfer.
(a) (i) From the name of a deceased holder to his heir.	Head Postmaster or Sub-Postmaster of the post office where the certificate stands registered.
(ii) From a holder to court of law, or to any other person under the orders of a court of law.	
(iii) From a single holders to the names of two joint holders of whom the transferer shall be one.	
(iv) From joint holders to the name of one of the joint holders.	
(b) All other cases	Head Postmaster.

(2) An authorised Postmaster shall give his consent to the transfer of a certificate only if the following conditions are satisfied, namely :—

(a) the transferee is eligible under these rules to purchase certificate ;

(b) the transfer is made after the expiry of a period of at least one year from the date of the certificate or where the transfer is sought before the expiry of such period, the transfer falls under any of the following categories, namely :—

(i) transfer to a near relative out of natural love and affection ;

Explanation.—For the purposes of this rule, “near relative” means husband, wife, lineal ascendant or descendant, brother or sister.

(ii) transfer in the name of the heir of the deceased holder ;

(iii) transfer from a holder to a court of law or to any other person under the orders of a court of law ;

(iv) transfer in accordance with rule 16 ; and

(v) transfer in the name of the survivor in the event of the death of one of the joint holders.

(c) An application for the transfer is made in the form laid down by the Director General, Posts and Telegraphs and is signed by the holder or holders of the certificate :

Provided that in the case of a Joint ‘A’ Type Certificate or a Joint ‘B’ Type Certificate, the application may be signed by one of the holders if the other is dead.

(3) Without prejudice to the provisions of sub-rule (2), an authorised Postmaster shall give his consent to the transfer of a certificate held on behalf of a minor only if at the time of the proposed transfer, a parent or the guardian referred to in sub-clause (i) or, as the case may be, sub-clause (ii), of clause (b) of section 5 of the Act, certifies in writing, that the minor is alive and that such transfer is in his interest.

(4) In every case of transfer, other than a transfer under rule 16; the original certificate shall be duly discharged and the new certificate bearing the same date as that of the original certificate surrendered shall be issued in the name of the transferee.

15. Transfer from single holding to joint holding and vice-versa.—Subject to the provisions contained in sub-rule (1) of rule 14, on an application to this effect being made—

(a) a certificate in the name of a single holder may be transferred jointly in the names of the holder and any other person ;

(b) a certificate in the names of joint holders may be transferred to the name of one of the joint holders.

16. Pledging of certificate.—(1) On an application being made in the form laid down by the Director General, Posts and Telegraphs, by the transferer and the transferee, the Postmaster of the office of registration may, at any time, permit the transfer of any certificate as security to—

(a) the President of India or Governor of a State in his official capacity ;

(b) the Reserve Bank of India or a scheduled bank, or a co-operative society, including a co-operative bank ;

(c) a corporation or a Government company ; and

(d) a local authority ;

Provided that the transfer of a certificate purchased on behalf of a minor shall not be permitted under this sub-rule unless the parent or the guardian of the minor referred to in sub-clause (i) or, as the case may be, sub-clause (ii), of clause (b) of Section 5 of the Act certifies in writing that the minor is alive and the transfer is for the benefit of the minor.

(2) When any certificate is transferred as security under sub-rule (1), the Postmaster of the office of registration shall make the following endorsement on the certificate, namely—

“Transferred as security to.....”.

(3) Except as otherwise provided in these rules, the transferee of a certificate under this rule shall, until it is re-transferred under sub-rule (4), be deemed to be the holder of the certificate.

(4) A certificate transferred under sub-rule (2) may, on the written authority of the pledgee, be re-transferred with the previous sanction in writing of the authorised Postmaster and when any such re-transfer is made, the Postmaster of the office of registration shall make the following endorsement on the certificate.

“Re-transferred to.....”.

Note 1.—A Gazetted Officer of the Government accepting the certificate as security under sub-rule (1) or releasing the pledge under sub-rule (4) on behalf of the President or the Governor of a State, shall certify that he is duly authorised under article 299 of the Constitution to execute such instruments or deeds on behalf of the President of India or the Governor of the State, giving the particulars of the number and date of the notification of the Government authorising him in this behalf.

Note 2.—An officer of the Reserve Bank of India or a schedule bank or a co-operative society including a co-operative bank, a corporation or a Government company or a local authority, as the case may be, accepting the certificate as security under sub-rule (1) or releasing the pledge under sub-rule (4) on behalf of the respective institution, shall certify under his dated signature and seal of office that he is duly authorised under the articles of the said institution, to execute such instruments or deeds on its behalf.

(5) Where as a result of several endorsements made under sub-rules (2) and (4) on a certificate, no space is left for making further endorsements of a like character on that certificate, a fresh certificate may be issued by the Postmaster of the office of registration in lieu of such certificate.

(6) A fresh certificate issued under sub-rule (5) shall be treated as equivalent to the certificate in lieu of which it has been issued for all the purposes of these rules.

17. Replacement of lost or destroyed certificate.—(1) If a certificate is lost, stolen, destroyed, mutilated or defaced, the person entitled thereto may apply for the issue of a duplicate certificate to the post office, where the certificate is registered or to any other post office in which case the application will be forwarded to the post office of registration.

(2) Every such application shall be accompanied by—

(a) a statement showing particulars, such as, number, amount and date of the certificate and the circumstances attending such loss, theft, destruction, mutilation or defacement ;

(b) an identity slip, if any.

(3) If the officer in charge of the post office of registration is satisfied of the loss, theft, destruction, mutilation or defacement of the certificate, he shall issue a duplicate certificate on the applicant's furnishing an indemnity bond in the form laid down by the Director General, Posts and Telegraphs with one or more approved sureties or with a bank's guarantee.

Provided that where the face value or the aggregate face value of the certificate or certificates lost, stolen, destroyed, mutilated or defaced is Rs. 500 or less, a duplicate certificate or certificates may be issued on the applicant furnishing an indemnity bond without any such surety or guarantee :

Provided further that where such application is made with respect to a certificate mutilated or defaced, of whatever face value, a duplicate certificate may be issued without any such indemnity bond, surety or guarantee, if the certificate mutilated or defaced and the identity slip, if any, are surrendered and the certificate is capable of being identified as the one originally issued.

(4) A duplicate certificate issued under sub-rule (3) shall be treated as equivalent to the original certificate for all the purposes of these rules except that it shall not be encashable at a post office other than the post office at which such certificate is registered without previous verification.

18. Nomination.—(1) Subject to the provisions of sub-rules (2) to (6), the single holder or joint holders of a certificate may, by filling in necessary particulars in Form I at the time of purchasing the certificate, nominate any person who, in the event of death of the single holder or both the joint holders, as the case may be, shall become entitled to the certificate and to the payment of the amount due thereon. If such nomination is not made at the time of purchasing the certificate, it may be made by the single holder, the joint holders or the surviving joint holder, as the case may be, at any time after the purchase of the certificate but before its maturity, by means of an application in Form 2 to the Postmaster of the office at which the certificate stands registered.

(2) There shall not be more than one nominee, except in cases where the denomination of a certificate is Rs. 500 or more.

(3) No nomination shall be made in respect of a certificate applied for and held by or on behalf of a minor.

(4) A nomination made by the holder or holders of a certificate under this rule may be cancelled or varied by submitting an application in Form 3 affixing postage stamps of the value specified in sub-rule (2) of rule 29 together with the certificate to the Postmaster of the post office at which the certificate stands registered.

(5) Separate applications for nomination or cancellation of a nomination or variation of a nomination shall be made in respect of certificate registered on different dates.

(6) The nomination or the cancellation of a nomination or the variation of a nomination shall be effective from the date it is registered in the post office, which date shall be noted on the certificate.

19. Encashment on maturity and payment of interest.—(1) The maturity period of a certificate of any denomination shall be six years commencing from the date of the certificate. A certificate shall be encashable at par at any time after the expiry of its maturity period.

(2) Interest on a certificate of any denomination shall be payable at the end of every six months from the date of the certificate, but not beyond the maturity period for which the certificate is held. Such interest shall be calculated at the rate of 12 per cent per annum on the face value of the certificate.

Note : The interest for each six monthly period can be claimed at any time after the expiry of that period and where for any reason such interest having become due has not been claimed, no additional interest on that ground shall be payable under any circumstances.

20. Premature encashment.—(1) Notwithstanding anything contained in rule 19, a certificate of any denomination may, at the option of the holder or holders be encashed at a discount at any time after the expiry of three years from the date of the certificate, in which event the amount payable

after adjustment of discount shall be as specified in the Table below :

TABLE

Amount payable after adjustment of discount on premature encashment of a certificate.

Period from the date of the certificate to the date of its encashment	Amount payable (Rs.) on a certificate of Rs. 100 denomination
3 years or more, but less than 3 years and 6 months.	91.55
3 years and 6 months, or more, but less than 4 years.	89.90
4 years or more, but less than 4 years and 6 months.	88.15
4 years and 6 months, or more, but less than 5 years.	86.35
5 years or more, but less than 5 years and 6 months.	84.45
5 years and 6 months, or more, but less than 6 years.	82.45

Note:—The amount payable after adjustment of discount on a certificate of any other denomination shall be proportionate to the amount specified in the Table above.

(2) Notwithstanding anything contained in sub-rule (1) and rule 19, and subject to sub-rule (3), a certificate may be prematurely encashed before the expiry of three years from the date of the certificate in any of the following circumstances, namely :—

- on the death of the holder or both the holders in case of joint holders ;
- on forfeiture by a pledgee being a Gazetted Government Officer, when the pledge is in conformity with the provisions of these rules ;
- when ordered by a court of law.

(3) If a certificate is encashed under sub-rule (2), the face value of the certificate shall be payable after deducting therefrom discount as specified below :—

- if the certificate is encashed before the expiry of one year from the date of the certificate, discount equivalent to the interest paid or payable under sub rule(2) of rule 19.
- if the certificate is encashed after the expiry of one year but before the expiry of three years from the date of the certificate, discount equivalent to the difference between (a) the interest paid or payable under sub-rule (2) of rule 19 and (b) simple interest calculated on the face value of the certificate, at the rate applicable from time to time to single accounts under the Post Office Savings Bank Rules, 1965, for the complete months for which the certificate has been held.

21. Place of encashment.—A Certificate shall be encashable at the post office which it stands registered :

Provided that a certificate may be encashed at any other post office if the officer-in-charge of that post office is satisfied on production of identity slip or on verification from the office of its registration that the person presenting the certificate for encashment is entitled thereto.

22. Discharge of certificate—(1) The person entitled to receive the amount due under a certificate shall, on its encashment sign on the back thereof in token of having received the payment.

(2) In the case of a certificate purchased on behalf of a minor who has since attained majority, the certificate shall be signed by such a person himself, but his signature shall be attested either by the person who purchased it on his behalf or by any other person who is known to the Postmaster.

(3) A certificate of discharge may be issued by the post office to any person encashing a certificate on payment of the fee specified in sub-rule (1) of rule 29.

23. Encashment of minor's certificate.—A person encashing a certificate on behalf of a minor shall furnish a letter from the parent or the guardian of the minor referred to in sub-clause (i), or as the case may be, sub-clause (ii), of clause (b) of Section 5 of the Act, to the effect that the minor is alive and that the money is required on behalf of the minor.

(2) When the nominee is a minor, the person appointed under sub-section (3) of section 6 of the Act while encashing the certificate, shall furnish a certificate that the minor is alive and that the money is required on behalf of the minor.

24. Payment to heirs.—(1) For the purposes of sub-section (4) of section 7 of the Act the authorities named below shall be competent to sanction claims upto the limit noted against each on the death of the holder of the certificate, without production of the probate of his will or letters of administration of his estate or succession certificate granted under the Indian Succession Act, 1925 (39 of 1925) :—

Name of authority	Limit
(i) Time Scale Departmental Sub Postmaster.	Rs. 100
(ii) Sub Postmaster in Lower Selection Grade.	Rs. 250
(iii) (a) Non-Gazetted Head Postmaster and Sub Postmaster in Higher Selection Grade.	Rs. 500
(b) Deputy Postmaster in Higher Selection Grade and Assistant Presidency Postmaster in Higher Selection Grade.	
(iv) Deputy Postmaster in Group 'B' and Deputy Presidency Postmaster.	Rs. 2,000
(v) (a) Group 'A' or Group 'B' Postmaster/Presidency Postmaster and Superintendent of Post Offices/Senior Superintendent of Post Offices.	Rs. 5,000
(b) Heads of Postal Circles (Assistant Director/Assistant Postmaster General)	

25. Encashment of Certificate held by Army, Air Force and Navy Personnel.—Where a certificate is held by a person who is subject to the Army Act, 1950 (46 of 1950) or the Air Force Act, 1950 (45 of 1950) or the Navy Act, 1957 (62 of 1957) and such person dies or deserts, the Commanding Officer of the Corps, department, detachment, unit or ship to which the deceased or deserter belonged or the Committee or Adjustment as the case may be, may send a requisition to the officer in-charge of the post office where the certificate stands registered to pay to him or it, the amount due under the certificate; and the officer-in-charge of the post office shall be bound to comply with such requisition even though there is in force at the time of death or desertion of holder of the certificate a nomination made in favour of any person.

Explanation : The aforesaid requisition must be made under section 3 or section 4 of the Army and Air

Force (Disposal of Private Property) Act 1950 (40 of 1950), in the case of a person belonging to the Army or the Air Force, or under section 171 or section 172 of the Navy Act, 1957 (62 of 1957) in the case of a person belonging to the Navy.

26. Rights of nominees—(1) In the event of the death of the holder of a certificate, in respect of which a nomination is in force, the nominee or nominees shall be entitled at any time before or after the maturity of the certificate to :—

(a) encash the certificate; or

(b) sub-divide the certificate in appropriate denominations in favour of individual nominees or two adult nominees jointly.

(2) For the purpose of sub-rule (1), the surviving nominee or nominees shall make an application to the postmaster of the office of registration, supported by proof of death of the holder and of deceased nominee or nominees, if any.

(3) If there are more nominees than one, all the nominees shall give a joint discharge of the certificate at the time of receiving payment or sub-division.

Note—When there is a nomination in favour of a single nominee or two adult nominees the post office of registration may, on an application made in that behalf, issue a fresh certificate in the name of such nominee or nominees jointly as the case may be.

27. Conversion from one denomination to another.—(1) Certificates of lower denomination may be exchanged for a certificate or certificates of higher denomination of the same aggregate face value or a certificate of higher denomination may be exchanged for certificates of lower denomination of the same aggregate face value :

Provided that certificate bearing different dates shall not be combined for being exchanged for certificate or certificates of higher denomination.

(2) The date of the certificate or certificates issued in exchange shall be the same as that of the original certificate or certificates surrendered and not the date on which the exchange is made.

28. Income-tax—Interest on certificates specified in sub-rule (2) of rule 19 shall be liable to tax under the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), but no tax shall be deducted at the time of payment of interest.

29. Fees—(1) A fee of rupee one in the case of a certificate of the denomination of Rs. 500 or above and a fee of twenty-five paise in any other case shall be chargeable in respect of the following transactions, namely :—

(i) transfer of certificate from one person to another, other than a transfer from the holder to a court of law or under the orders of a court of law;

(ii) issue of a duplicate certificate under rule 17;

(iii) issue of a certificate of discharge under rule 22; and

(iv) conversion from one denomination to another under rule 27.

Explanation—(1) The fee to be charged for the issue of a certificate of discharge under clause (iii) shall be calculated separately on the aggregate face value of all certificates which were purchased on any one application and which are included for discharge certificate.

Explanation—(2) The fee to be charged for a conversion under clause (iv) shall be based on the number and denomination of the certificates required to be issued on such conversion.

(2) A fee of fifty paise shall be chargeable on every application for registration of nomination, or of any variation in nomination or cancellation thereof.

Provided that no fee shall be charged on an application for registration of the first nomination.

30. Responsibility of the Post Office.—The post office shall not be responsible for any loss caused to a holder by any person obtaining possession of a certificate and fraudulently encashing it.

31. Rectification of mistakes.—The Director General, Post and Telegraphs, or the Postmaster General or Heads of Postal Divisions in their respective jurisdictions, may either suo motu or upon an application by any person interested in any certificate issued in pursuance of these rules, rectify any clerical or arithmetical mistakes with respect to that certificate, provided that it does not involve any financial loss to the Government or to any such person.

32. Power to relax.—Where the Central Government is satisfied that the operation of any of the provisions of these rules causes undue hardship to the holder or holders of a certificate, it may, be order, for reasons to be recorded in writing, relax the requirements of that provision in a manner not inconsistent with the provisions of the Act.

## FORM 1

(See Rules 6, 10 and 18(1))

## INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT

Serial No.

## FORM OF APPLICATION FOR THE PURCHASE OF NATIONAL SAVINGS CERTIFICATES (VII ISSUE)

(1) I/We hereby apply for the purchase of National Savings Certificates (VII Issue) detailed in the statement below and tender the amount shown in column 1 of the statement.

Form of tender	Amount	Deno- mina- tion of certi- ficates applied for Rs.	No. of certifi- cates required	*Type of joint certi- ficates requi- red (‘A’ or ‘B’ type)	Total face- value
	1	2	3	4	5
(i) Cash					
(ii) Cheque, de- mand draft or an appro- ved local Bank's Pay order or Pay Slip, No. dated . . . on . . Bank.		100  500			
(iii) Application for withdrawal from Post Office Savings Bank		1,000  5,000			
(iv) Matured certificates for re-investment.					
Total face value					

\*To be filled in only in case of joint holding

(a) \*\*In my/our name(s).....  
(in Block Capitals)  
with aliases, if any.

\*\*For single or joint holder.

(b) †On behalf of minor .....  
Block Capitals

†For purchase on behalf of minor.

Date of birth of minor.....

†To be made encashable by the minor's.

(i) Father, (ii) Mother, (iii) Either parent, (iv) Legal  
Guardian.

‡(Cross out the alternative not required or all the items if it is  
not desired to make an authorisation).

(Cross out (a) or (b) whichever is not required).

@(c) In the name of ..... (members  
etc.) through ..... (society or company,  
etc.)

@(For a co-operative society, co-operative bank or a sche-  
dued bank, on behalf of its members clients employees or  
contractors, whose monies are held as deposit or otherwise  
with such society or bank; for a gazetted Government officer,  
an officer of a Government company or of a corporation or  
of a local authority, or an officer of a corporate body like  
a marketing committee established under State Act and  
authorised by the State Government in this behalf, in his offi-  
cial capacity, or the Reserve Bank of India).

(2) I/We hereby agree to abide by the National Savings  
Certificate (VII Issue) Rules, 1981.

\*\*\*I/We do/do not require identity slip. (In case of an  
investment through an authorised agent or a messenger,  
specimen signature(s) and marks of identification should be  
given below paragraph (5)).

\*\*\*Cross out whichever is not applicable.

Note—No identity slip shall be issued to a person other  
than the one authorised vide paragraph 1(b) above in case  
of purchase on behalf of a minor.

Signature (not thumb Impression)  
of the person(s) authorised if  
any, per paragraphs 1(b) above.

Signature (or thumb  
impression if illiterate)  
of investor.

Date.....

Address.....

Date.....

Address.....

Note—In case of an illiterate applicant the father's name  
may be given.

(4) The certificate(s) and the identity slip may be made  
over to my/our agent Shri/Smt. ....  
Authority No. .... or messenger who  
presents this application. (Cross out words not applicable).

\*To be signed or thumb  
impression affixed only  
when the investor does not  
take delivery of certificates  
personally.

\*Signature (or thumb impression  
if illiterate) of investor.

Date.....

(5) Received the certificate detailed above and identity slip.

‡Cross out, if the identity slip is not to be issued.

Signature or thumb impression  
of purchaser or his agent/  
messenger.

(In case of authorised agent his  
Authority No. should be given.)  
Specimen Signature.

Marks of identification.

(6) Under provisions of section 6(1) of the Government Savings Certificates Act, 1959, I/We,..... the holder(s) of Savings Certificate(s) mentioned in this application hereby nominate the person/s mentioned below who shall, on my/our death, become entitled to the Savings Certificate(s) and the amount due thereon to the exclusion of all other person(s):—

Serial No.	Name of Nominee(s)	Full Address	Date of birth of nominee in case of minor.

As the nominee(s) at serial No. (s).....above is/are minor(s) I/We appoint Shri/Smt./Kumari..... (name and full address) as the person to recover the amount due thereon in the event of my/our death during the minority of the nominee(s)

Signature and full address of witness.	Signature (or thumb impression if illiterate) of holder/s.

To be completed by the Post Office.

Sl. No. of certificates issued	Issue Price Rs.	Date of payment of interest	Date of encashment and initials of Post-master.	Remarks like transfer, Issue of Duplicates etc. & initials of Post-master.

Total number of National Savings Certificates (VII Issue)

Date	19	Signature of Postmaster

## FORM 2

[See Rule 18(1)]

### INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT

Serial No.....

#### FORM OF APPLICATION FOR NOMINATION UNDER SECTION 6 OF THE GOVERNMENT SAVINGS CERTIFICATES ACT, 1959

(This form will be filled in by the holder/s and submitted with the certificates to the Postmaster of the office where the certificates stand registered).

To

The Postmaster,

Under Provisions of section 6(1) of the Government Savings Certificates Act, 1959, I/We..... the holders of Savings Certificates detailed on the reverse, hereby nominate the person/s mentioned below, who shall, on my/our death, become entitled to the Savings Certificate/s and to be paid the sum due thereon to the exclusion of all other persons. I/We

hereby declare that I/We have not so far made any nomination in respect of these certificates. The certificates are enclosed.

Sl. No.	Name of the nominee	Full address	Date of birth of nominee in case of minor

As the nominee/s at serial.....above is/are minor/s, I/We appoint Shri/Smt./Kumari..... (name and full address) as the person to recover the sum due thereon in the event of my/our death during the minority of the nominee/s.

S. Nos. of Certificates	Denomination	Date of Issue	Office of Issue

Address:—

(In case of illiterate holder father's name should be given)

Yours faithfully,

Signature (or thumb impression, if illiterate) of holder/s.

Witnesses—

Name

Address (1)

Name

Address (2)

N.B.:—In the case of illiterate holders, the witnesses shall be persons whose signatures are known to the Post Office.

Order of the Postmaster accepting the nomination.

Date stamp  
of  
Post Office

Signature of Head/Sub-  
Postmaster

## FORM 3

[See Rule 18(4)]

### INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT

Serial No.....

#### FORM OF APPLICATION FOR CANCELLATION OR VARIATION OF NOMINATION PREVIOUSLY MADE IN RESPECT OF SAVINGS CERTIFICATES UNDER SECTION 6 OF THE GOVERNMENT SAVINGS CERTIFICATES ACT, 1959

(This form will be filled in by the holder/s and submitted with the certificate to the Postmaster of the office where the certificate stands registered).

To

The Postmaster,

Space for  
Postage Stamps

Under provisions of Section 6(1) of the Government Savings Certificates Act, 1959, I/We.....

holder/s of Savings Certificates detailed on the reverse, hereby cancel the nomination previously made by me/us in respect of these certificates and registered in your office under No. .... dated. ....

\*In place of the cancelled nomination, I/We hereby nominate the person/s mentioned below, who shall, on my/our death, become entitled to the Savings Certificate/s and to be paid the sum due thereon to the exclusion of all other persons.

Sl. No.	Name of the nominee	Full Address	Date of birth of nominee in case of minor

\*To be filled up in case of variation only

As the nominee/s at serial ..... above is/are minor/s, I/We appoint Shri/Smt./Kumari.....(name and full address) as the person to recover the sum due thereon in the event of my/our death during the minority of the nominee/s. The Certificates are enclosed.

Sl. Nos. of Certificates	Denomination	Date of issue	Office of issue

Address:-

Yours faithfully,

(In case of illiterate holder, father's name should be given)

Signature (or thumb impression, if illiterate) or holder/s.

Witnesses:-

Name

Address (1)

Name

(2)

Address

N.B.:—In the case of illiterate holders, the witnesses shall be persons whose signatures are known to the Post Office.

Date Stamp of Post Office

Order of the Postmaster accepting nomination

Signature of Head/Sub-Postmaster

[F. No. 3/5/81-NS(ii)]  
A. C. TIWARI, Jt. Secy.

सां. क्र. 311(अ) — केन्द्रीय सरकार, सरकारी बचत पत्र अधिनियम, 1959 (1959 का 46) की धारा 1 की उपधारा (iii) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, यह विनिश्चित करती है कि राष्ट्रीय बचत पत्र—छठा निर्गम और राष्ट्रीय बचत पत्र सातवा निर्गम—बचत पत्र के ऐसे वर्ग होंगे जिनको उक्त अधिनियम लागू होता है।

[फ. सं. 3/5/81 एन एस (iii)]

ए. सी. तिहारी, संयुक्त सचिव

**G.S.R. 311(E).**—In exercise of the powers conferred by sub-section (3) of section 1 of the Government Savings Certificates Act, 1959 (46 of 1959), the Central Government hereby specifies that the National Savings Certificates—VI Issue and the National Savings Certificates—VII Issue shall be the classes of savings certificates to which the said Act applies.

[F. No. 3/5/81-NS(iii)]

A. C. TIWARI, Jt. Secy.

